चन्दामामा

माँ - वच्चों का मासिक पत्र

1st Feb '55

6 as

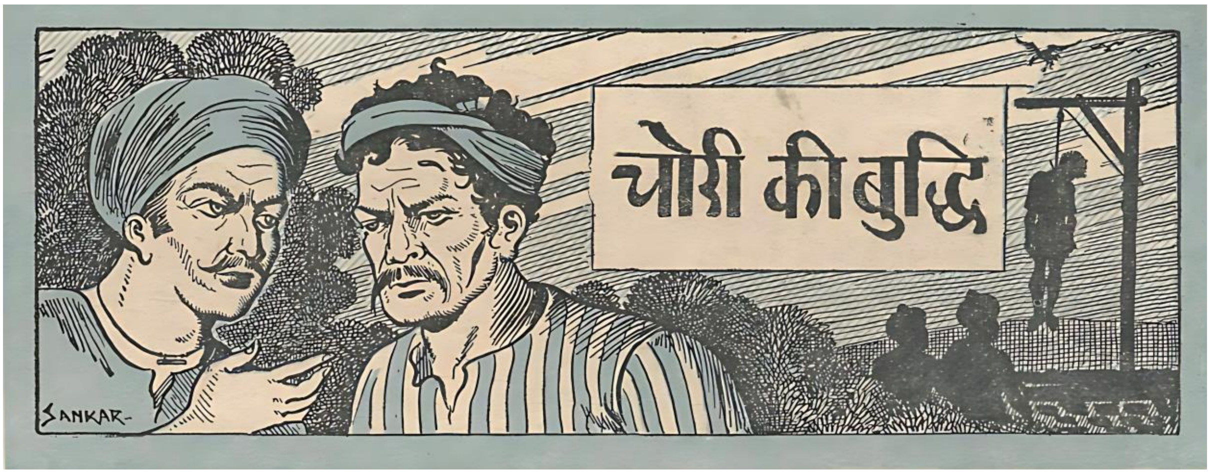

एक राज्य में चोरियाँ अधिक होने लगीं। इसलिये राजा ने हुक्म दिया कि जो कोई चौर पकड़ा जाय, उसको शहर के बीचों बीच फाँसी पर चढ़ा दिया जाय। कई चोर फाँसी पर लटका भी दिये गये।

उसी राज्य के एक गाँव में हीरा और चन्दू नाम के दो चोर रहा करते थे। साथ के चोरों को फाँसी पर चढ़ा देख, उन्हें डर लगा। उन दोनों ने चोरी का पेशा छोड़ने का निश्चय किया।

"अब तक काफ़ी पाप किये हैं। कम से कम अब तो भले आदमियों की तरह जिन्दगी बसर करें।" हीरा ने कहा।

"अगर पेशा ही करना हो तो कई सारे पेशे हैं।" चन्दू ने कहा।

उन दोनों ने एक गाँव के जमीन्दार के यहाँ नौकरी कर ली। रोज़ बैलों को बाहर चराने ले जाना हीरे का काम था और बाग में पेड़-पौधों को पानी देने का काम चन्दू के जिम्मे था।

पहले दिन सबेरे सबेरे उठकर हीरा बैलों को जङ्गल में चराने ले गया। बैलों ने उसको खूब तङ्ग किया। वे आपस में लड़ते, इधर उधर भागते, पासवाले खेतों में जा घुसते। हीरा दिक आ गया।

चन्दू ने भी बाग में पौधों को पानी देना शुरू किया। कितने ही घड़े पानी ले जाकर उसने डाले, पर पौधों के लिये पानी काफ़ी नहीं होता था। आधे बाग में भी पानी नहीं दे पाया था कि उसके हाथों में छाले पड़ गये और दुखने लगे। शाम तक वह बाग में पानी देता ही रहा।

उस दिन रात को हीरा और चन्दू आपस में यों बातें कर रहे थे :-

"मुझे तो ऐसा लग रहा है, जैसे मैंने काम ही न किया हो। बैलों को जङ्गल में छोड़ दिया, और आराम से पेड़ के नीचे लेट गया। शाम के समय बैल खुद-ब-खुद मेरे पास आ गये। उनके आने की ध्वनि सुन मैं उठ खड़ा हुआ और उन्हें घर हाँक लाया।" हीरे ने कहा।

"मेरा काम भी कुछ ऐसा ही था। चार घड़े पानी से ही सारा बाग तरबतर हो गया। दिन भर एक खटिया पर पड़ा रहा।" चन्दू ने कहा।

"शाबाश! ऐसी बात है तो कल तुम बैलों को चराने ले जाना और मैं बाग में पानी दे दूँगा।" हीरे ने कहा।

चन्दू को मन ही मन बहुत ही खुशी हुई। "मैं भी यही कहना चाहता था।" उसने हीरे से कहा।

"चरागाह में सोने के लिये एक खटिया ले जाना। भूल न जाना, समझे।" हीरे ने कहा।

दूसरे दिन उन्होंने अपने काम का अदला-बदला कर लिया। दोनों को एक दूसरे का धोखा मालूम हो गया।

परन्तु हीरे को एक और विचित्र बात भी मालूम हुई। बाग में एक आम के पेड़ की जड़ में चाहे जितना भी पानी डालो, वह झट सूख जाता था। आखिर बात क्या है, यह उसने जानने की ठानी।

उस दिन रात को न हीरे ने अपने काम के बारे में कुछ कहा, न चन्दू ने ही। दोनों ऐसे लेट गये, जैसे सो रहे हों। बाद में, हीरा उठा और पास में रखे रम्भे को उठाकर उस आम के पेड़ के पास गया, और उसका थाल खोदने लगा। थोड़ी देर खोदने के बाद रम्भे पर कोई चीज़ लगी और 'खङ्ग....!' शब्द हुआ।

तुरन्त हीरे ने चारों ओर देखा। चन्दू अन्धेरे में, पास ही खड़ा हुआ था।

"क्या खोद रहे हो ?" चन्दू ने पूछा।

"इस पेड़ का थाल ठीक नहीं है। नींद नहीं आई। इसलिये थाल बना रहा हूँ।" हीरे ने कहा, जैसे कोई बात ही न हो।

"फिर बजा क्या था ?" चन्दू ने हँसी रोकते हुये पूछा।

"कोई पत्थर वत्थर होगा। आओ भी, सो जायें।" हीरे ने कहा।

दोनों जाकर सो गये। चन्दू के सो जाने पर हीरे ने चाहा कि देखा जाय, रम्भे पर लगा क्या था। परन्तु वह पहले ही सो गया।

हीरा खर्राटे मारने लगा। चन्दू उठा। फावड़ा लेकर आम के पेड़ के पास पहुँचा। गढ़ा खोदकर दो गहनों से भरे घड़े निकाले। उन्हें झट कहीं न कहीं छिपाना था। पास में एक तालाब था। एक उथली जगह,जहाँ ज्यादा गहराई न थी, उसने उन दोनों घड़ों

को कीचड़ में दबा दिया, और वापस आकर ऐसे सो गया. मानों कुछ जानता ही न हो।

हीरा तड़के उठा। रम्भा लेकर पेड़ के पास गया। घड़ों का कहीं पता न

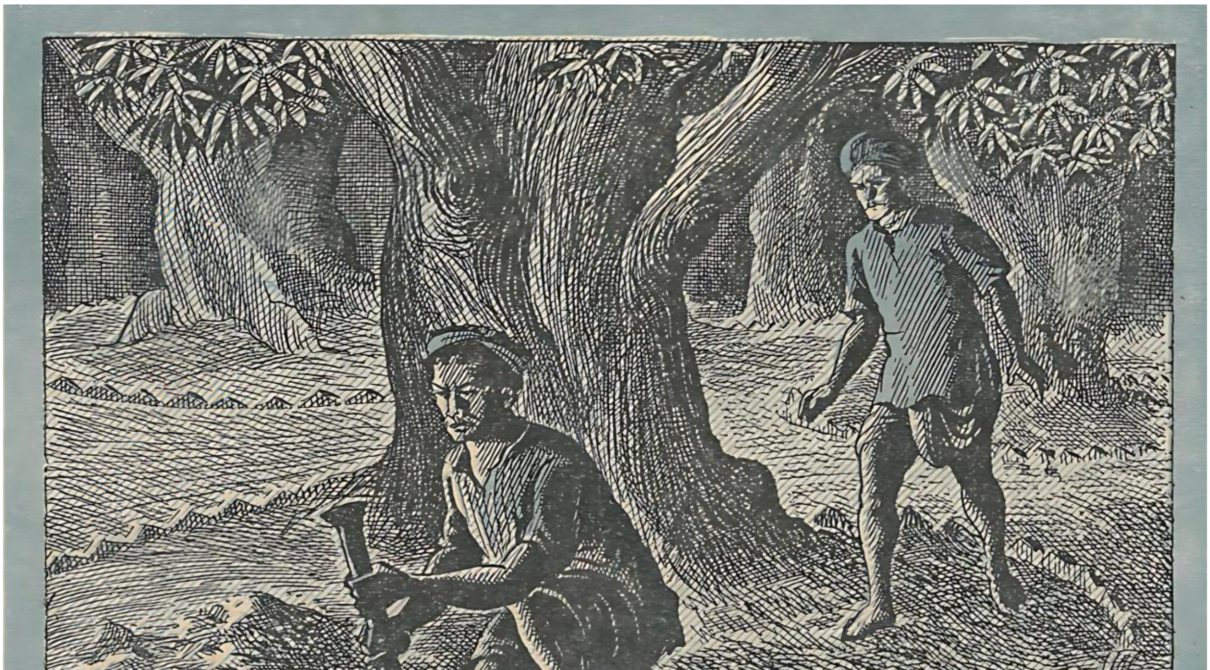

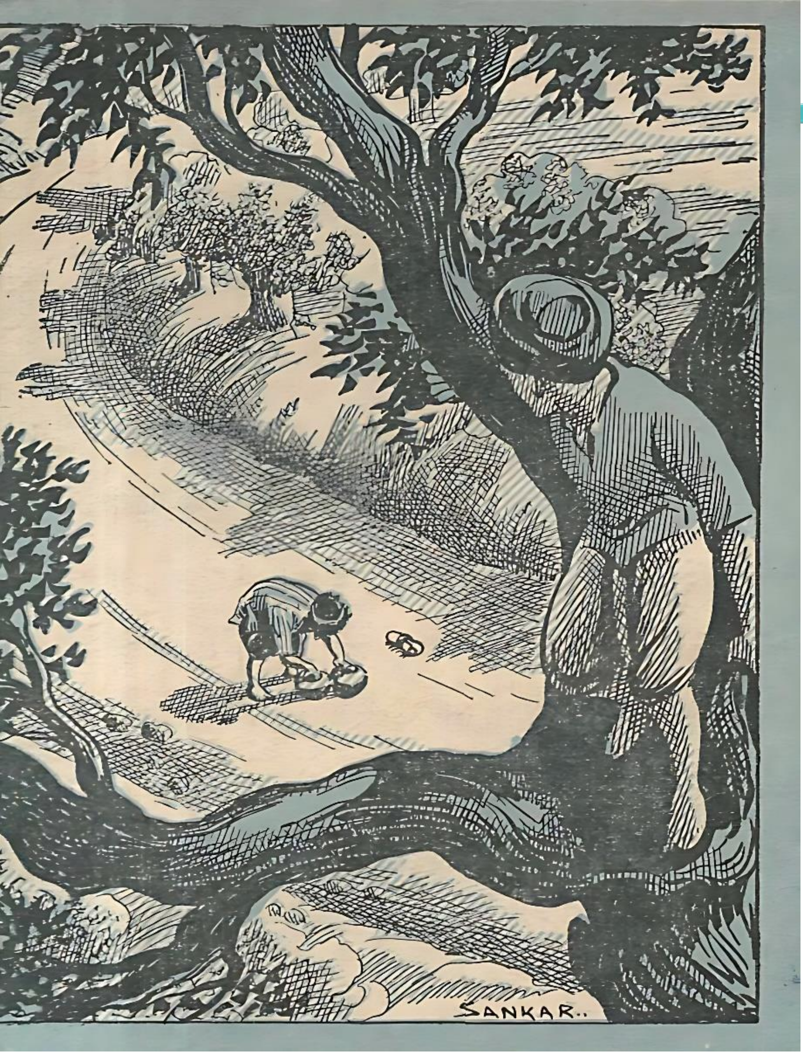

को खोजने लगा। वे वहाँ न थे। वह जान गया कि हीरा उन्हें लेकर अपने गाँव की ओर भाग गया होगा। वह भी गाँव की ओर भागने लगा। थोड़ी देर भागने पर देखा कि उसके आगे हीरा कन्धे पर घड़े रख कर चला जा रहा था। चन्दू रास्ता छोड़ पगडण्डी से जा हीरे से पहले ही रास्ते पर फिर आ गया। उसने रास्ते में अपनी एक नई चप्पल छोड़ दी। फिर सौ, पचास गज़ बाद अपनी दूसरी चप्पल डाल दी। वह पासवाले पेड़ पर चढ़ गया। डाली और पत्तों के पीछे छुपकर खड़ा हो गया।

थोड़ी देर बाद गहनोंवाले घड़ों को ढोये, हीरा चला आ रहा था। उसको एक नई चप्पल दिखाई दी। परन्तु वह चूँकि एक ही थी, वह निराश हो आगे बढ़ा। सौ गज़ जाने बाद उसका जोड़ा दिखाई दिया। फिर उसमें इच्छा पैदा हुई। आसपास किसी को न पा हीरे ने घड़े नीचे रखे। चप्पल लेकर दूसरी चप्पल के लिये भागा।

इसी बीच चन्दू पेड़ पर से उतरा और रास्ते में रखे गहनोंवाले घड़ों को कन्धे पर रख गाँव की तरफ भागा।

था। वापिस आकर उसने सोये हुये चन्दू के पैरों को गौर से देखा। उसके पैरों में थोड़ा-सा कीचड़ तब भी लगा हुआ था। वह ताड़ गया कि पेड़ की थाल में मिली हुई चीज़ों को उसने तालाब में छुआ दिया है। सीधा तालाब की ओर गया। तालाब में एक तरफ़ मेंढ़कों का शोर न था। वहीं ढूँढ़-ढाँढ़कर गहनोंवाले घड़े खोज निकाले। उनको कन्धे पर रख अपने गाँव की तरफ़ जल्दी जल्दी चल पड़ा।

चन्दू कुछ देर बाद सोकर उठा। उसने देखा कि हीरा बगल में नहीं था। तालाब जाकर गहनोंवाले घड़ों

जब चप्पलों को लेकर हीरा आया तो घड़े वहाँ न थे। उसे मालूम हो गया कि वह चन्दू की करतूत थी। वह जल्दी जल्दी चलने लगा और थोड़ी देर में ही चन्दू के घर पहुँच गया। उसका चन्दू के घर में पैर रखना था कि उसे अन्दर से रोना-धोना सुनाई दिया। हीरा अचम्भे में पड़ गया। उसने पूछा कि क्या बात है?

चन्दू की पत्नी और लड़के ने रोते हुये कहा कि चन्दू गुज़र गया है। घर के बीचों बीच, एक खटिया पर, कपड़े से ढ़का चन्दू का शव भी दिखाया। थोड़ी देर हीरा भी उनके साथ रोया। फिर उसने यों कहा:-

"हम दोनों अच्छे लङ्गोटिया यार थे। उसकी आखिरी इच्छा को पूरी करने के सिवाय मैं फ़िलहाल कुछ भी नहीं कर सकता हूँ। उसने चाहा था कि अगर वह मुझसे पहले मर जाय तो मैं उसको कटे अरहर के खेत में अरहर के ठूँठों पर घसीटूँ। मैं उसकी आखिरी इच्छा पूरी किये देता हूँ।"

यह कहते कहते हीरे ने चन्दू के शरीर को कन्धे पर डाला, और अरहर के खेत की ओर ले गया।

अरहर के चाकू के समान ठूँठ देख कर चन्दू को लगा, जैसे सचमुच मौत आ गई हो! उसे डर लगा कि अगर वह कुछ न बोला तो हीरा उसको खेत में ज़रूर घसीटेगा।

चन्दू तुरन्त उठा और हीरे के पैर पकड़ कहने लगा-"भैया! मुझे माफ़ करो। अब इस चोरी से बाज़ आये। आओ, भले मानसों की तरह जियें। फिर यह चोरी की बुद्धि भी क्यों? दो घड़े हैं । तुम एक ले लो और मैं एक ले लूँ; और आराम से जियें।"

फिर गहनोंवाले घड़ों को आपस में बाँट लिया और अमीर हो, वे आराम से जिन्दगी काटने लगे।

प्रतिष्ठान देश में सुप्रतिष्ठित नाम का एक बड़ा शहर हुआ करता था। उस नगर में एक वैश्य स्त्री रहा करती थी। जब उसके पति गुज़र गये तो उसके सम्बन्धियों ने उसकी ज़मीन-जायदाद सब हड़प ली। पति के मरने के समय वह गर्भवती थी। कुछ दिनों बाद उसने एक पुत्र का जन्म दिया। उसने जैसे तैसे, अपने लड़के का लालन-पालन किया। वह बड़ा हुआ। तब उसकी माँ ने उससे यों कहा-"बेटा ! तू बनिये का लड़का है। व्यापार करना तेरा पैतृक पेशा है। दुर्भाग्य से तू गरीब पैदा हुआ। इसलिये तेरे पास व्यापार के लिये ज़रूरी पूँजी नहीं है। परन्तु इस शहर में धनगुप्त नाम का एक करोड़पति है। वह गरीब बनियों की मदद करता रहता है। उसका दर्शन कर व्यापार के लिये पूँजी माँग।" माँ की सलाह के अनुसार वह लड़का धनगुप्त के दर्शनार्थ गया। उस समय वह करोड़पति किसी नौजवान के डाँट-डपट रहा था:-

"तुम में तनिक भी व्यापार करने की तमीज़ नहीं है। तुम्हें कई बर पूँजी दी। उससे फ़ायदा उठाना तो अलग, पूँजी ही खो बैठे। अगर आदमी अक्लमन्द हो तो मरे हुये चूहे को ही पूँजी मानकर लाखों कमा सकता है।"

उस लड़के ने, जो करोड़पति की बात सुन रहा था, उससे पूँजी न माँगी। दूरी पर पड़े मरे हुये चूहे को लेकर चला गया। उस चूहे को ले जाकर एक व्यापारी को, उसकी बिल्ली के आहार के लिये दे दिया। उसने बदले में उसको दो मुट्ठी चने दिये। उसने उन चनों को भूना, नमक-मिरच मिलाया,

स्वर्णलता कपूर

और ठण्डे पानी का घड़ा लेकर, शहर से बाहर एक पेड़ के नीचे वह बैठ गया।

कड़ी दोपहरी में, जङ्गल में लकड़ियाँ काट, शहर जाते जाते कुछ लकड़हारों ने पेड़ के नीचे आराम लिया। इस लड़के ने उनका हाल-चाल पूछा और हरेक को खाने को थोड़े से चने और पीने को लोटा भर पानी दिया। उन लोगों ने खुश हो उसको दो दो लकड़ियाँ दे दीं।

इस प्रकार कुछ लकड़ियाँ इकट्टी कर उसने शहर में बेच दीं, और जो पैसा मिला, उससे फिर चना खरीद लिया। थोड़े दिनों बाद उसके पास इतना पैसा हो गया कि वह स्वयं लकड़ियों के गट्ठर खरीदने लगा। चनों का व्यापार छोड़, वह लकड़ियों का व्यापार करने लगा। उसने कुछ लकड़ियाँ खरीदकर रख लीं। इतने में बरसात आई। लकड़ियों का दाम चढ़ा।

उसने अपनी लकड़ियाँ बेच खूब पैसा कमाया। उस पैसे से उसने पंसारी की दुकान खोली।

व्यापार अच्छी तरह चल पड़ा। इतना फ़ायदा हुआ कि उसने अपने मकानात और बगीचे भी बना लिये। वह बनिये का लड़का लखपति हो गया। क्योंकि वह चूहे के कारण रईस हुआ था, उसको लोग 'चूहालाल' कह कर पुकारा करते थे। एक बार 'चूहेलाल' ने सोने का चूहा बनवाया और उसको धनगुप्त को देते हुये कहा-"यह आपकी ही दिखाई पूँजी है। इससे मैने बहुत पैसा बनाया है। मय ब्याज के मैं आपको वारिस कर रहा हूँ। यह सब आपकी ही मेहरबानी है।"

धनगुप्त को, चूहेलाल की सफ़लता की कहानी सुन बहुत सन्तोष हुआ। उसने खुशी खुशी अपनी लड़की का उससे विवाह कर दिया और उस सोने के चूहे को उपहार के रूप में अपने दामाद को दे दिया।

काश्मीर में, एक मछली बेचनेवाली राजमहल में गई। जब रानी मछलियों का भाव-ताव कर रही थी, तो एक मछली टोकरी में से उचक उचककर देखने लगी।

"मुझे मादा मछली ही चाहिये। वह मछली नर है या मादा ?" रानी ने पूछा। रानी के यह पूछते ही मछली ज़ोर से हँसी। मछली बेचनेवाली ने कहा कि उसके पास सब नर मछली ही हैं। रानी ने मछली बेचनेवाली को बाहर भेज दिया। चूँकि उसको देखकर एक मछली हँसी थी, रानी को बहुत गुस्सा आया। वह खिझ कर अपने कमरे में चली गई।

राजा ने उसके गुस्से का कारण मालूम कर लिया। मन्त्री को बुलवा भेजा। "एक मामूली मछली, सुना है, रानी को देखकर ज़ोर से हँसी है? वह क्यों हँसी? उसकी हँसी का क्या कारण है? यह मुझे महीने भर में बताओ, नहीं तो तुम्हारा सिर कटवा दिया जायगा।" राजा ने उसको धमकी दी।

मन्त्री का तो दिल बैठ गया। वह सोचता-सोचता घर गया। उसने अपने घर ज्योतिषियों, योगियों, और मान्त्रिकों आदियों को बुलाया और उनसे पूछा-"सुना है, एक मामूली मछली रानी साहिबा को देख कर हँसी थी। क्या तुममें से कोई बता सकता है, इसका क्या कारण था?"

एक भी न बता पाया। मन्त्री जान गया कि वह मौत से न बच सकेगा। इसी फ़िक्र में उसने पलङ्ग पकड़ी।

मन्त्री का लड़का बुद्धिमान था। जवाब ढूँढ़ने के लिये वह स्वयं घर से निकल पड़ा। चलते चलते उसको एक बूढ़ा किसान रास्ते में दिखाई दिया। उसके साथ ही चलने लगा।

रामनारायण व्यास

कुछ दूर चलने के बाद मन्त्री के लड़के ने किसान से पूछा-"हमारी इस तरह जाने से तो अच्छा होगा कि हम एक दूसरे के कन्धे पर चढ़कर चलें। चलना आसान हो जायगा। तुम्हारा क्या कहना है ?"

किसान ने कोई जवाब न दिया। उसने सोचा. लड़के का शायद दिमाग ठिकाने पर नहीं है। फिर लड़के ने एक पके धान के खेत को देखकर पूछा-"क्यों भाई, यह अभी तक खाया क्यों नहीं गया?" इसका भी जवाब किसान ने न दिया। इस प्रश्न से किसान को सन्देह हुआ कि कहीं वह पागल तो नहीं है?

कुछ दूर चलने के बाद एक जङ्गल पड़ा। मन्त्री के लड़के ने तलवार निकालकर देते हुए कहा-"यह ले जाकर दो घोड़े ला सकते हो ? हमारे काम में आयेंगे। तलवार मत खो देना। बहुत कीमती है।"

उसका भी किसान ने कोई जवाब न दिया। पर वह समझने लगा कि वह लड़का हो न हो, सचमुच पागल है।

जङ्गल पारकर दोनों एक शहर में घुसे। उस शहर में उन दोनों से किसी ने कुछ बातचीत न की। मन्त्री के लड़के ने चारों तरफ़ देखते हुये

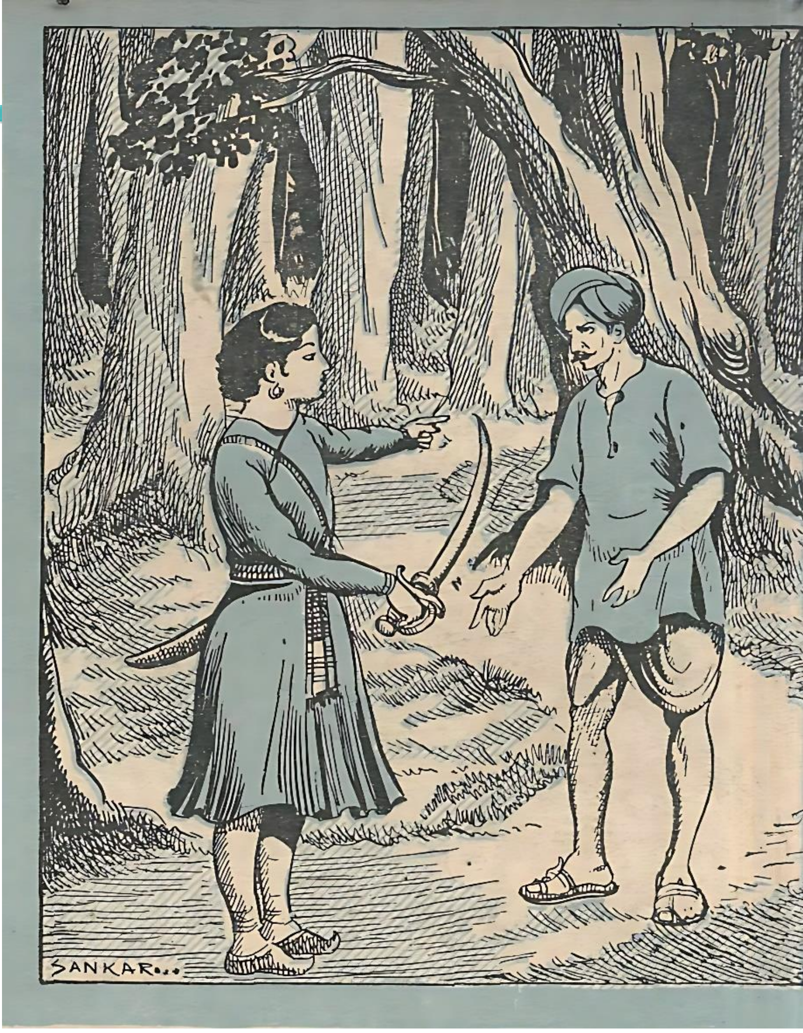

कहा-"यह बहुत बड़ा श्मशान है।" यह सुन किसान हँस पड़ा।

शहर पार कर, वे दोनों श्मशान के पास पहुँचे। श्मशान में मुरदे जल रहे थे। मृत-व्यक्तियों के बन्धु बान्धव आते जाते लोगों को खाने की चीजें बाँट रहे थे। इन दोनों को भी खाने को दिया।

दो-चार कदम आगे बढ़ मन्त्री के लड़के ने इधर-उधर देखते हुये कहा-"यह एक बड़ा भव्य नगर है।"

थोड़ी दूर पर एक नाला पड़ा। किसान ने धोती ऊपर बाँधी, चप्पल उठा, नाला पार

कर गया। लड़के ने कुछ न किया। जैसा था, वैसे ही नाले में उतरा। किसान जैसे-तैसे अपने गाँव पहुँचा। लड़का भले ही पागल हो, क्योंकि वह इतनी दूर से उसके साथ आ रहा था, उसको उसने अपने घर भोजन का न्योता दिया। लड़के ने कहा- "मुझे तुम्हारे घर आने में तो कोई एतराज़ नहीं, परन्तु इससे पहले कि तुम मुझे अपने घर बुलाओ, यह देख लो कि छत के बाँस पक्के हैं कि नहीं।"

"इस पागल से बातें करना ही गलती है।" यह सोच किसान अपने घर चला गया। उसने अपनी पत्नी और बेटी को 'पागल' के बारे में बताया। किसान की लड़की बहुत ही होशियार और अक्लमन्द थी। पिता की बात सुनकर उसने यों धीमे धामे कहा-

"पिताजी ! यह लड़का पागल नहीं है। वह तो बहुत होशियार लगता है। इसी कारण तुम्हें उसकी बातें समझ में नहीं अई। उसका एक दूसरे के कन्धे पर चढ़कर चलने का मतलब था कि एक दूसरे को कहानियाँ सुनाते चलें। 'क्यों भाई ! इस खेत को काटकर अभी तक खाया क्यों वह नहीं गया ?'- इसका मतलब भी दूसरा है। अक्सर किसानों पर कर्ज़ रहता है, उसका मतलब था कि महाजन उसको अभी तक काट क्यों नहीं ले गये? 'तलवार लेकर दो घोड़ों को लाओ।' कहकर वह बतलाना चाहता था कि जङ्गल से दो डण्डे काट लओ । डण्डा तो जङ्गल में बहुत काम का होता है। शहर में उससे किसी ने बातचीत नहीं की; इसलिये उसने उसको श्मशान कहा। चूँकि श्मशान में उसकी आवभगत हुई थी, इसलिये उसने उसको शहर कहा। नाला पार करते समय, उसको क्या मालूम

था कि पानी में क्या हो, इसलिये उसने जूते नहीं उतारे; धोती ऊपर नहीं की। वह बहुत अक्लमन्द है। अगर तुम कहते कि हमारे छत के बाँस बहुत मज़बूत हैं, तो वह ज़रूर हमारे घर आता। उसने यह जानने के लिये ही कि हम उसका आतिथ्य कर सकते हैं कि नहीं, शायद यह कहा था। देखो, मैं उसका आतिथ्य करती हूँ।"

किसान की लड़की ने एक छोटी-सी कटोरी को पूरा-पूरा घी से भरा। बारह रोटियाँ और एक कटोरे में दूध भर, नौकर के हाथ बस्ती के बाहर ठहरे हुये मन्त्री के लड़के के पास भेजा। साथ एक चिट्ठी भी दी, जिसमें यह लिखा था-

"प्रिय मित्र ! चाँद पूरा है। वर्ष में बारह मास होते हैं। समुद्र तट को काट कर बाहर आने को उतावला हो रहा है।"

किसान की दी हुई चीज़ों को लेकर ने जब नौकर मन्त्री के लड़के के पास जा रहा था, तो रास्ते में उसको उसका लड़का मिला। उसने पिता से कुछ चीजें खाने के लिये ले लीं। बची-खुची चीज़ों को लेकर वह मन्त्री के लड़के के पास पहुँचा।

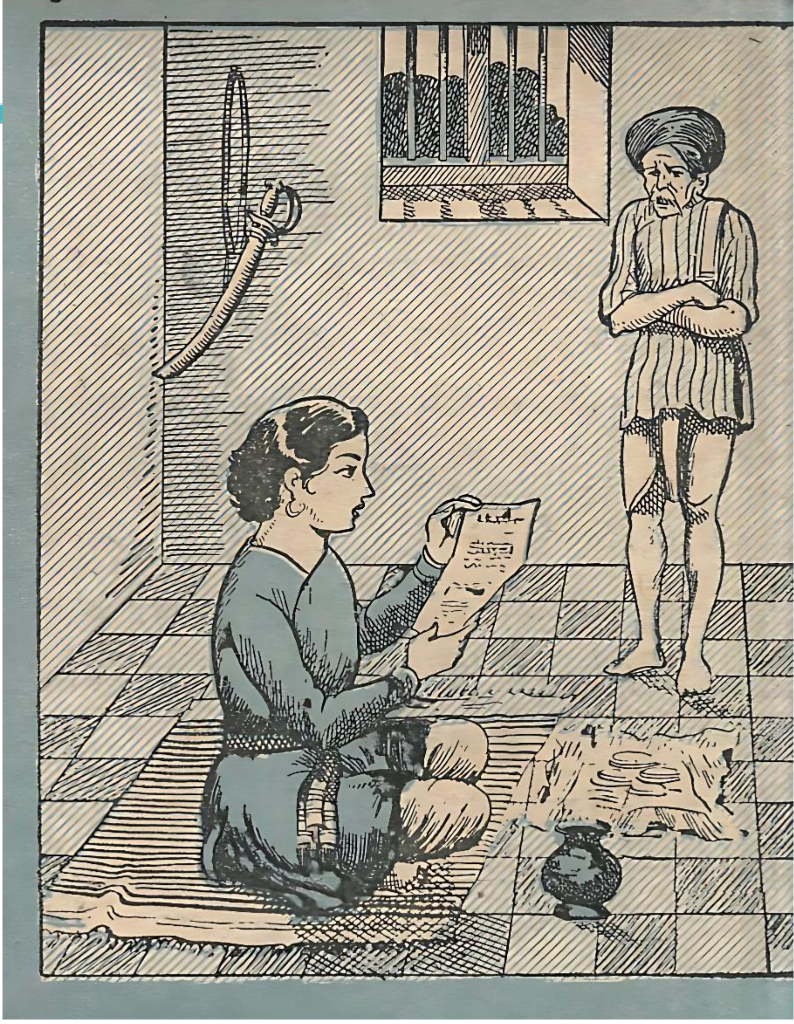

लड़के ने खाना खाकर, किसान की लड़की की चिट्ठी पढ़, उत्तर यों दिया-

"प्रिय मित्र ! आमावस के कारण चन्द्रमा का पता ही नहीं लगा। वर्ष में ग्यारह ही महीने हैं। समुद्र में पानी आधा है।" यह जवाब पढ़ते ही किसान की लड़की नौकर से तुरन्त पूछा-"तूने घी, एक चपाती और दूध का क्या किया ?" उसकी चोरी मालूम हो गई।

उसके बाद बूढ़ा किसान, लड़के को अपने घर बुला लाया। मन्त्री के लड़के और किसान की लड़की में बहुत देर तक

बातचीत होती रही। आखिर में मन्त्री के लड़के ने किसान की लड़की से, रानी को देखकर मछली के हँसने की बात भी पूछी-"मछली के हँसने का क्या कारण हो सकता है?"

रानी के महल में शायद कोई आदमी बिना किसी को पता लगे, रह रहा होगा।" किसान की लड़की ने कहा।

मन्त्री के लड़के को आश्चर्य हुआ उसने पूछा-"अगर यह बात सच हुई, तो इसे साबित करने के लिये क्या तुम मेरी मदद करोगी? तुम मेरे पिता के प्राण बचानेवाली होगी।"

किसान की लड़की ने मान लिया और वह मन्त्री के लड़के के साथ चल पड़ी। दोनों मन्त्री के घर आये। मन्त्री बहुत आनन्दित हुआ और उसने राजा से मछली के हँसने का कारण बता दिया।

"इसके लिये सबूत ?" राजा ने पूछा। "शहर में एक चौड़ा गढ़ा खुदवाइये।" किमान की लड़की ने सलाह दी।

एक चौड़ा गढ़ा खोदा गया और रानी की सेविकाओं को उसमें कूदने के लिये कहा गया। कोई भी न कूद पाई। सिर्फ़ एक साहस कर कूद सकी।

"वह औरत नहीं है; परीक्षा करके देखिये।" लड़की ने कहा। उसका कहना ठीक निकला। वह स्त्री नहीं थी; स्त्री वेष में, अतःपुर में रहनेवाला एक आदमी था। चूँकि किसान की लड़की ने एक धोखेबाज़ की पोल खोल दी थी, रानी बहुत खुश हुई। उस आदमी को सज़ा दी गई।

राजा ने मन्त्री को बहुत सारा इनाम दिया, और उसके लड़के और किसान की लड़की का धूम-धाम से विवाह करवाया।

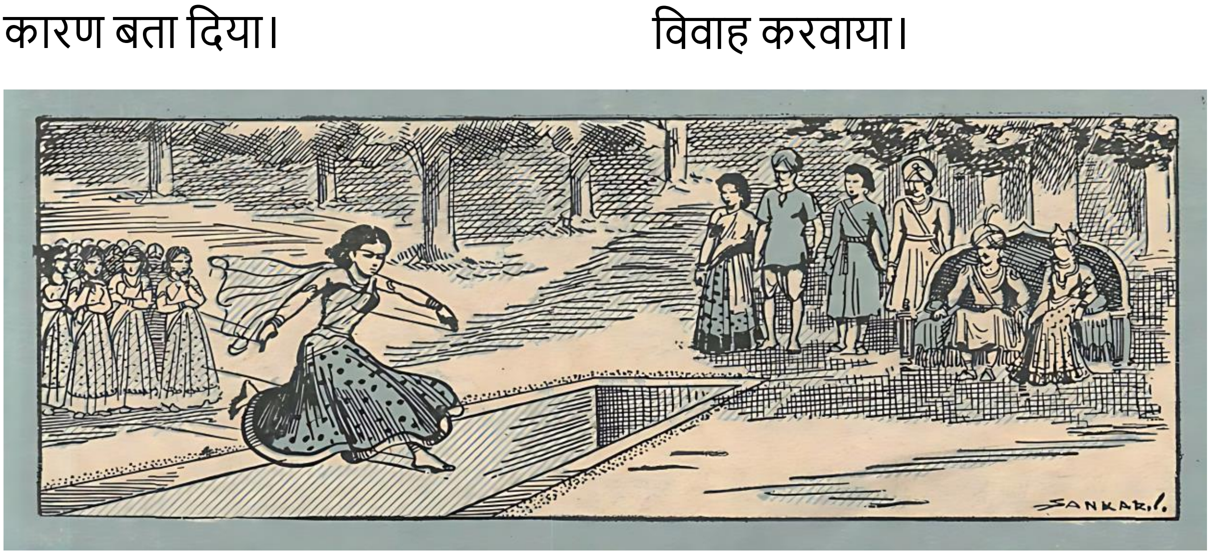

समरसेन और उसको छुड़ाकर ले जानेवाले दोनों सैनिक जब गाँव में पहुँचे, तो वहाँ तहलका मचा हुआ था। शोर-शरावा हो रहा था। भाले-बरछे लेकर व्याघ्रदत्त के सैनिक घरों की तलाशी ले रहे थे। डर के मारे कई सारे गाँववाले पासवाले पहाड़ों और जङ्गलों में भाग रहे थे।

जो कोई उनके सामने आता, सैनिक उससे पूछते-"शिवदत्त कहाँ है ? शिवदत्त कहाँ है ?" जब वह कहता कि-"मुझे मालूम नहीं है" तो उसे बुरी तरह सताते, मारते-पीटते।

जब वे गाँव से थोड़ी दूर ही थे कि समरसेन और उसके साथियों ने यह भयङ्कर दृश्य देखा। इसलिये वे सीधे गाँव में न गये। वहीं पेड़ों की आड़ में खड़े हो, वह दृश्य गौर से देखने लगे। "यह शिवदत्त कौन हो सकता है ?" समरसेन रह रहकर सोचने लगा।

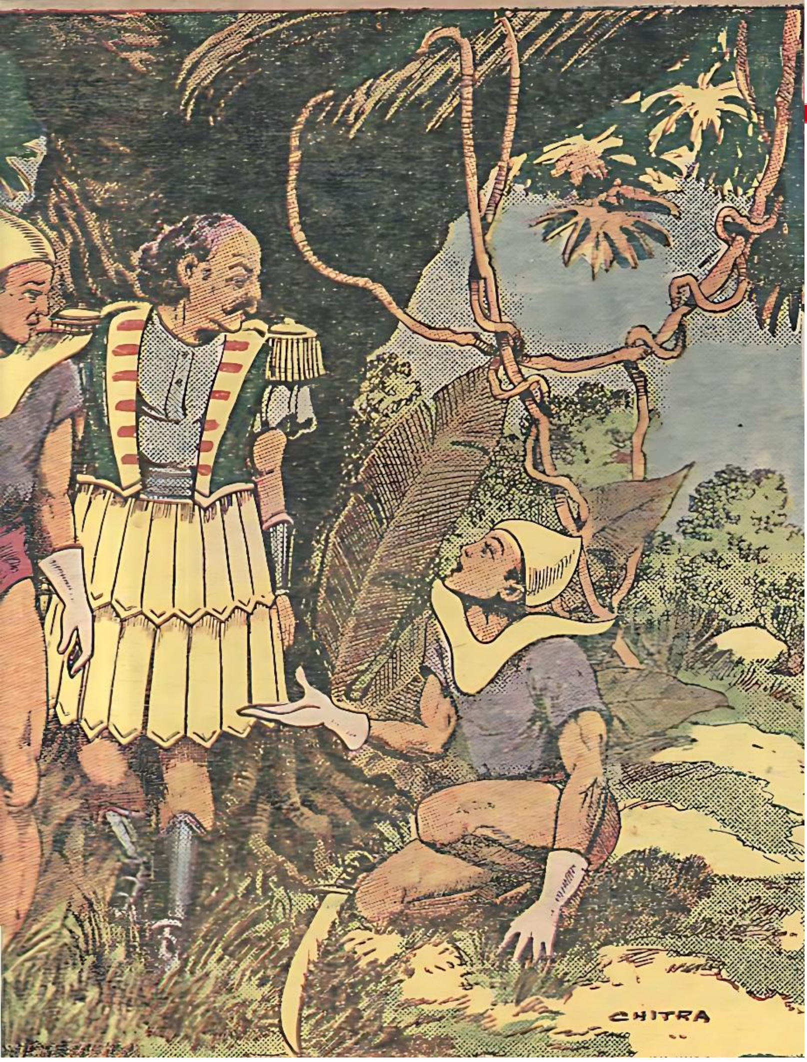

"यह शिवदत्त कौन है? और ये सैनिक कौन हैं, जो गाँववालों को सता रहे हैं?" समरसेन ने साथ के सैनिकों से कुछ घबराते हुये और कुछ उत्सुकता से पूछा।

एक सैनिक ने जवाब दिया-"यह शिवदत्त हमारा सरदार है। हम आपको उनके हुक्म पर ही कैद से छुड़ाकर लाये हैं। गाँव को तहस-नहस करनेवाले ये व्याघ्रदत्त के सैनिक हैं।"

यह जवाब सुनकर समरसेन को तसल्ली न हुई। उसका यह सन्देह कि शिवदत्त ने उसको क्यों कैद से छुड़ाया है, वह उससे क्या आशा करता है, वैसा का वैसा ही बना रहा। शिवदत्त और व्याघ्रदत्त में क्यों शत्रुता है, यह भी समरसेन न जान सका।

"तब हमें अब क्या करना चाहिये?" समरसेन ने पूछा।

उसके साथ के दोनों सैनिक एक दूसरे की तरफ़ ताकने लगे। उनके हाव-भाव देखने से साफ़ लगता था कि वे यह सोच नहीं पा रहे थे कि क्या किया जाय। सब के सब बड़ी आफत में फँसे हुये थे।

शिवदत्त ने आपको यहाँ लाने के लिये कहा था। वह आपसे मैत्री करना चाहता है, इसीलिये उसने हमें आपके पास भेजा था। परन्तु व्याघ्रदत्त को उसके रहने की जगह का भेद मालूम हो गया। इसी वजह से उसके सैनिक गाँव की छानबीन कर रहे हैं। शिवदत्त को पहले से ही इस खतरे के बारे में मालूम हो गया होगा, और वह कहीं भाग गया होगा।" सैनिक ने कहा।

जब तक यह नहीं मालूम होता कि शिवदत्त किस तरफ भाग गया है, समरसेन और उस सैनिकों के खतरे में पड़ जाने की आशङ्का थी, यह वे भली भाँति जान गये थे। वे यह सोच ही रहे थे कि क्या किया जाय

कि पीछे से एक बाण की ध्वनि सुनाई दी। झट तीनों ने बाण की तरफ़ देखा। दूरी पर पेड़ में छुपा हुआ एक व्यक्ति हाथ उठा उठाकर उनको बुला रहा था।

वह बुलानेवाला व्यक्ति शत्रु है, या मित्र समरसेन को सन्देह होने लगा। परन्तु वह प्रदेश उसके लिये नया था, सिवाय इसके कि उसके साथवाले जो कहें करने के, उसके पास कोई चारा भी न था।

समरसेन के साथवाले एक सैनिक ने धनुष पर बाण चढ़ाकर छोड़ा। उसके उत्तर में पेड़ पर छुपे हुये व्यक्ति ने दो तीन बाण छोड़े, और दायें हाथ पर बायाँ हाथ रख, दोनों हाथ ऊपर कर के दिखाये।

"वह हमारा मित्र ही है। उसने रहस्य सङ्केत को समझ लिया है। वह शिवदत्त का कोई नौकर ही हो सकता है, और कोई नहीं। आओ चलो, चलें !" सैनिक ने कहा।

समरसेन और वे दौनों सैनिक उस पेड़ के पास गये, जहाँ वह व्यक्ति छुपा हुआ था। जब वे तीनों पेड़ के पास पहुँचे, तो वह व्यक्ति पेड़ पर से उतर आया।

"आप ही के लिये मुझे शिवदत्त यहाँ बैठा गया है। आज सबेरे से ही व्याघ्रदत्त के

सैनिकों ने गाँव को घेर लिया है। यह बात शिवदत्त को दूतों द्वारा पहले ही मालूम हो गई थी। वह नौकर-चाकरों के साथ भाग गया। मैं आपकी यहाँ इन्तज़ार कर रहा था।" उसने कहा।

उसकी बात सुन सब को जान में जान आई। मगर शिवदत्त कहाँ भाग गया था ? उससे कैसे मिला जाय? यह उनके सामने एक उलझी हुई समस्या थी।

"ये समरसेन हैं। व्याघ्रदत्त के कैदखाने से उन्हें छुड़ाकर हम ला रहे है। इनको जल्द से जल्द शिवदत्त से मिलना है। क्या तुझे मालूम है कि वे कहाँ हैं ?" एक सैनिक ने पूछा।

तब उस नये व्यक्ति ने कहा-"वे कहाँ रह रहे हैं, यह तो उन्होंने मुझे नहीं बताया। मगर वे यह तस्वीरवाला कागज़ दे गये हैं। उन्होंने कहा था कि इस तस्वीर में उन्होंने उस जगह पर निशान कर दिया है, जहाँ वे रह रहे हैं। आप स्वयं देख लीजिये। मुझे तो कुछ समझ में नहीं आया।" उसने एक लिपटा हुआ कागज़ समरसेन को दे दिया।

समरसेन ने उस कागज़ को खोलकर ध्यान से देखा। उसमें पहाड़ों में कुछ खण्डहर, कुएँ और और बावड़ियाँ चित्रित थीं। हर चीज़ के नीचे उसका नाम भी लिखा हुआ था। परन्तु उसमें ऐसा कोई चिन्ह न था, जिससे यह मालूम हो सके कि शिवदत्त कहाँ छुपा हुआ है। यदि कोई चिन्ह था भी, तो उसे मालूम नहीं हो रहा था।

"शिवदत्त पहाड़ों में इन खण्डहरों की तरफ़ भाग गया है। मुझे नहीं मालूम, वह ऐसी जगह पर क्यों गया है, जब कि वह आफ़त में है ? कुछ भी हो, हमें भी तो इसी तरफ़ चल देना चाहिये न ?" समरसेन ने उनको तस्वीर दिखाते हुये पूछा।

दोनों सैनिकों ने स्वीकृति में अपने सिर हिलाये। परन्तु उस तस्वीर को देखकर रास्ता निकालने की जिम्मेवारी समरसेन पर पड़ी। उसने एक बार गाँव की ओर देखा। तब सारा गाँव जल रहा था, और व्याघ्रदत्त के सैनिक गाँव को जलता देख खुशियाँ मना रहे थे।

समरसेन ने निश्चय कर लिया था कि साथ के सैनिकों की मदद से व्याघ्रदत्त के सैनिकों का मुकाबला करना ख़तरे से खाली नहीं है। इसलिये उसके सामने अब एक ही काम था; जाकर शिवदत्त से मिलना, और जो कुछ वह कहे, उसे सुनना।

समरसेन ने तस्वीर देखकर आगे रास्ता निकाला। यह ज़रूरी था कि तस्वीर में दिखाई गई दिशाओं की ओर होशियारी से चला जाय। इसके आलावा, यह भी देखना था कि रास्ते में व्याघ्रदत्त के सैनिकों से कहीं मुकाबला न हो जाय।

थोड़ी दूर तक जङ्गल के बीच में से चलकर वे एक पहाड़ी इलाके में पहुँच गये। आस-पास छोटी-बड़ी पहाड़ियाँ थीं। जहाँ कहीं भी देखो, न आदमियों के पैरों के निशान थे, न कोई गाँव वगैरह ही थे। सब सुनसान था।

समरसेन ने एक टीले पर चढ़ चारों तरफ़ देखा। पहाड़ की तराई में सिर्फ़ उसे छोटे छोटे नाले दिखाई दिये। परन्तु एक जगह कुछ सपाट ज़मीन थी। उसने सोचा, वहाँ पहुँचने पर शायद आगे जाने का रास्ता मिल जाय।

वे पहाड़ पर से नीचे उतरे। सारी जगह पर इधर उधर बड़े बड़े पत्थर बिखरे हुये थे। छोटी छोटी झाड़ियाँ भी कहीं कहीं थीं। भयङ्कर इलाका था। चित्र में

CHITRA

दिखाये गये न खण्डहर, न खण्डहर तक पहुँचने का रास्ता ही वहाँ कहीं दिखाई दिया। वे घबराने लगे।

ज्योंही समरसेन और उसके साथी सैनिक थोड़ी दूर आगे बढ़े, तो उन्हें एक ऐसा नज़ारा दिखाई दिया, जिसे देखकर वे चकित ही नहीं हुये, बल्कि डरे भी। ऊँचे पहाड़ के किनारे पर से, एक राक्षस के मुख में से एक झरना नीचे गिर रहा था। पत्थर से उस राक्षस का मुँह बहुत अच्छी तरह गढ़ा हुआ था। देखनेवालों को झरने को राक्षस के मुख में से आता देख, लगता था, मानों वह नाला राक्षस के मुख में से ही निकलकर नीचे गिर रहा हो।

"यह तो बड़े आश्चर्य की बात है। आसपास में तो कहीं मनुष्यों के रहने का नामोनिशान नज़र नहीं आता। परन्तु यह स्पष्ट है कि राक्षस के मुँह को मनुष्यों ने ही गढ़ा है।" दाँतों तले अंगुली दे समरसेन ने कहा। वह अचम्भे में पड़ा हुआ था।

वे उस झरने को देखते देखते वहीं खड़े रहे। उनको ऐसा लगा कि झरने के पीछे कोई सुरङ्ग है। समरसेन ने सोचा, हो सकता है कि शिवदत्त उसी रास्ते से भाग गया हो। वह बहुत ही सुरक्षित स्थान था। किसी को यह सन्देह भी न हो सकता था कि वहाँ क्या हो सकता है। दीखने को सिर्फ़ झरना ही दीखता था, पर उसके पीछे सुरङ्ग था।

समरसेन ने शिवदत्त की भेजी हुई तस्वीर खोलकर देखी। उसमें एक जगह झरने का निशान था, उसे देख उसने जान लिया कि उसका अनुमान ठीक था। सैनिकों के साथ, घुटने भर पानी में से गुज़रकर वे सुरङ्ग की तरफ गये।

कुछ दूर तक चारों ओर अन्धेरा ही अन्धेरा था। जब वे दिल बान्धकर थोड़ी दूर आगे बढ़े, तो उन्हें रोशनी दिखाई दी। आखिर, सुरङ्ग की परली तरफ़ उन्हें समतल भूमि दिखाई दी। चारों तरफ़ ऊँचे ऊँचे पहाड़ थे। समरसेन और सैनिक जब सुरङ्ग से बाहर निकले, तो जिधर देखो, उधर मोर ही मोर दिखाई देते थे। उनमें से कुछ नाच रहे थे, कुछ अजीब अजीब आवाज़ कर हवा में उड़ रहे थे। वह सारी जगह मोरों से भरी पड़ी थी।

"इतने मोर पहले मैंने कहीं भी नहीं देखे।" समरसेन ने आश्चर्य से कहा। उसके साथ के सैनिको ने भी पहिले कभी ऐसी विचित्र जगह न देखी थी। समरसेन ने सोचा, मोरों का सौन्दर्य देखने से काम नहीं चलेगा। पहिले यह मालूम करना है कि शिवदत्त कहाँ है ?

वे थोड़ी दूर और चले और एक गुफा के पास पहुँचे। उन्हें यकायक हाथी का हुँकारना सुनाई दिया। वे अचम्भे में देख ही रहे थे कि गुफा के अन्दर से एक हाथी लपकता लपकता बाहर आया।

समरसेन और सैनिकों ने इस घटना की कल्पना भी नहीं की थी। हाथी को लपकता देख उनका दिल बैठ गया। डर के मारे वे इधर उधर भागने लगे।

समरसेन एक बड़े चट्टान के पीछे छुप गया। अगर हाथी सुरङ्ग से यकायक बाहर कूदा है, तो ज़रूर कोई न कोई पीछे खतरा रहा होगा, जिसने उसे कूदने के लिये बाधित किया। वह किस प्रकार का शत्रु है, कैसे जाना जाय ? शिवदत्त के दिये हुये चित्र में क्या सब चिन्ह वह पहचान नहीं पाया है ?

(अभी और है)

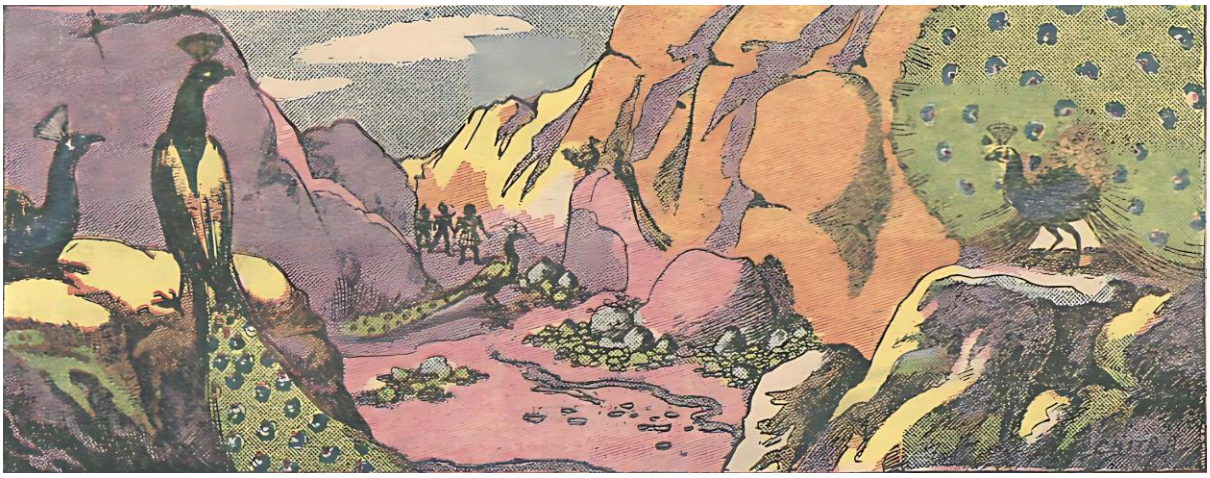

मिथिला नगर के राजा का एक ही लड़का था। उसका नाम कुश था। वह बहुत ही सदाचारी, और सर्व शास्त्रों में पारङ्गत था। आसपास के देशों में उसकी बड़ी कीर्ति थी। उन देशों के राजकुमार उसके घनिष्ट मित्र थे। इन सब के होते हुये भी उसमें सौन्दर्य न था। यह सोचकर कि वह बदसूरत है, सूखा जाता था। इसी कारण से उसने विवाह भी नहीं किया था। बूढ़े राजा ने कुश को कई बार समझाया कि वह विवाह कर देश की परम्परा बनाये रखे। हमेशा कुश पिता से यही कहा करता कि- "भला मुझ बदसूरत से कौन राजकन्या विवाह करेगी ?"

"तेरा परिचय होने पर कौन राजकन्या तुझ से प्रेम न करेगी ?" पिता उल्टा प्रश्न पूछा करता।

पिता की बात को टालने के लिये कुश को एक उपाय सूझा। उसने स्वयं सोने की एक बहुत सुन्दर मूर्ति बनाई और कहा कि यदि उसको वैसी कन्या कहीं मिल सकी, तो वह अवश्य उससे विवाह कर लेगा। उसका विश्वास था कि वैसी कन्या का संसार में मिलना सम्भव नहीं है।

परन्तु मगध राज्य की राजकुमारी प्रभावती की शक्ल उस मूर्ति से लगभग मिलती-जुलती थी। कुश की बनाई हुई मूर्ति के समान कन्या को ढूँढ़ते ढूँढ़ते मिथिला राजा के दूतों के मगध पहुँचने पर यह बात मालूम हुई। मगध राजा के एक नहीं, आठ लड़कियाँ थीं। क्योंकि मगध राजा ने मिथिला के युवराजा की प्रसिद्धि पहिले ही सुन रखी थी, इसलिये अपनी कन्या का उससे विवाह करने के लिये, वह सन्तोष-

रमाशङ्कर विद्यार्थी

पूर्वक मान गया। बिना उसको देखे, उसकी जैसी मूर्ति बनानेवाले से विवाह करने के लिये प्रभावती भी उतावली हो गई।

परन्तु कुश का दिल बैठ गया। उसने पिता से जाकर कहा कि उस अत्यन्त सुन्दर लड़की से उसकी शादी न करवाये। परन्तु राजा ने उसकी एक न सुनी।

"बस, एक साल अगर तेरी पत्नी तेरे साथ रही, तो वह सोचने लगेगी कि तुझसे बढ़कर इस संसार में कोई सुन्दर नहीं है। मेरी बात पर विश्वास कर।" पिता ने कहा। तब कुश ने पूछा-"परन्तु इस वर्ष के भीतर?"

बूढ़े राजा ने एक उपाय सोच निकाला।

"देख, हमारे देश में पुराने ज़माने से एक परिपाटी चली आती है। उस परिपाटी के अनुसार वधु को विवाह के समय वर को देखने का अधिकार नहीं है। तेरा विवाह उस परिपाटी के मुताबिक ही करवा दूँगा।" राजा ने कहा। "विवाह के बाद?" कुश ने पूछा।

"उसमें क्या रखा है? एक वर्ष तक तेरे शयनागार में दीप रखने की मनाई कर दी जायगी।" राजा ने कहा। कुश विवाह करने के लिये बाध्य हुआ। उसका विवाह प्रभावती से प्राचीन परिपाटी के अनुसार हुआ। रोज़ कुश पत्नी के पास अन्धेरे में जाया करता। उसे मज़ेदार कहानियाँ सुनाता। मीठे मीठे गाने गाता।

प्रभावती अपने पति की अच्छाई और बुद्धिमत्ता को देखकर फूली न समाती थी। परन्तु बारह महीने तक उसका मुँह देखने का उसे सौभाग्य न मिलेगा, यह सोचकर वह खिन्न रहा करती। रोज़ रोज़ उसका खेद बढ़ता गया। उसको लगा कि बिना पति का मुँह देखे, वह एक क्षण भी न रह सकेगी। प्रभावती ने अपनी दासी को बुला

कर कहा-"चाहे कुछ भी हो, तुमने अगर मेरे पति का मुँह मुझे दिखा दिया, तो मैं तुम्हें मुँह माँगा इनाम दूँगी।" दासी लालच में आ गई। एक बार जब कुश का शहर में जुलूस निकाला, तो खिड़की के किवाड़ की आड़ में से, प्रभावती को उसने कुश का दर्शन करा दिया।

कुश को देखते ही, प्रभावती का सिर चक्कर खाने लगा। "उसका पति इतना बदशक्ल है? झूठ है। परन्तु राजा की तरह जुलूस में जाने का हक भला किसी और को क्यों होगा? वह चूँकि बदसूरत है, इसलिये विवाह में उसका मुँह देखने न दिया। इसीलिये उसके शयनागार में बत्ती नहीं जलायी जाती। कितना धोखा ! कितना झूठ!"

प्रभावती को बहुत गुस्सा आया। वह अपने कपड़े और गहने लेकर मायके जाने के लिये तैयार हो गई।

यह बात कुश को मालूम हुई। उसने दुःख दुःख से कहा-"जैसी उसकी इच्छा है, उसे वैसे करने दो।"

उसने कह तो दिया, पर जब से प्रभावती मायके चली गई, तब से वह खोया

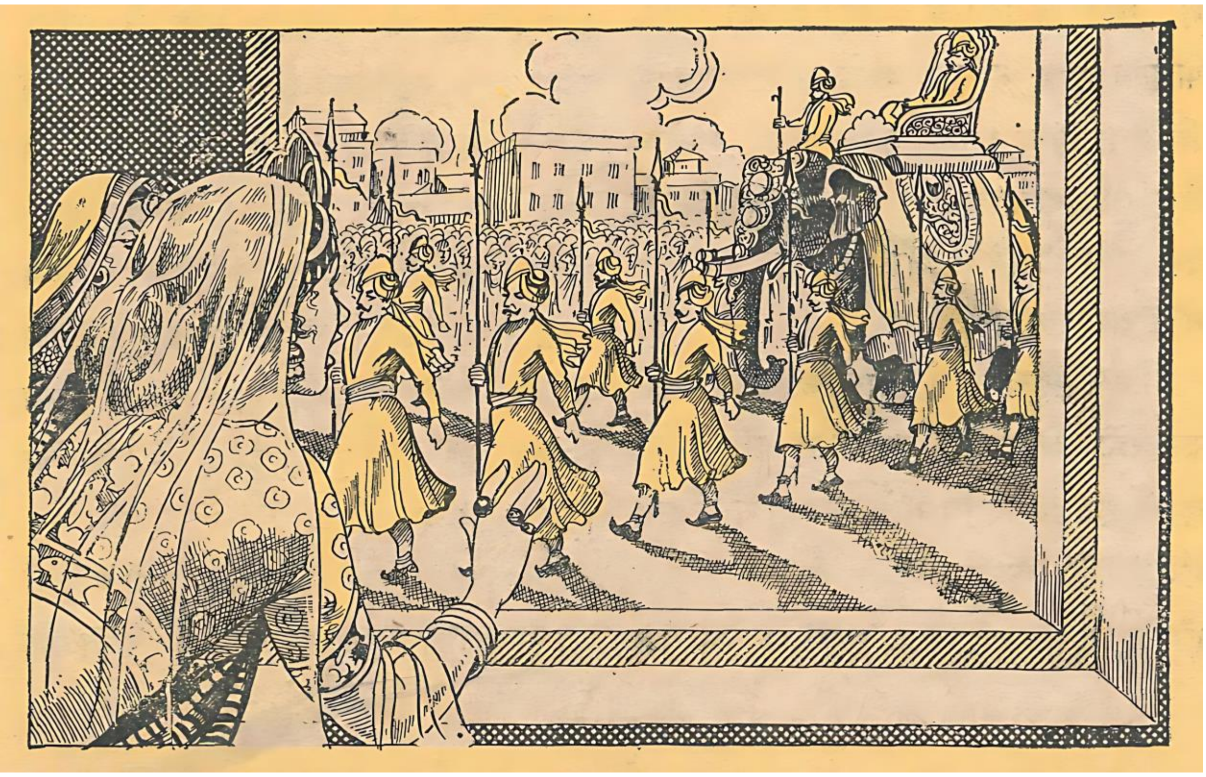

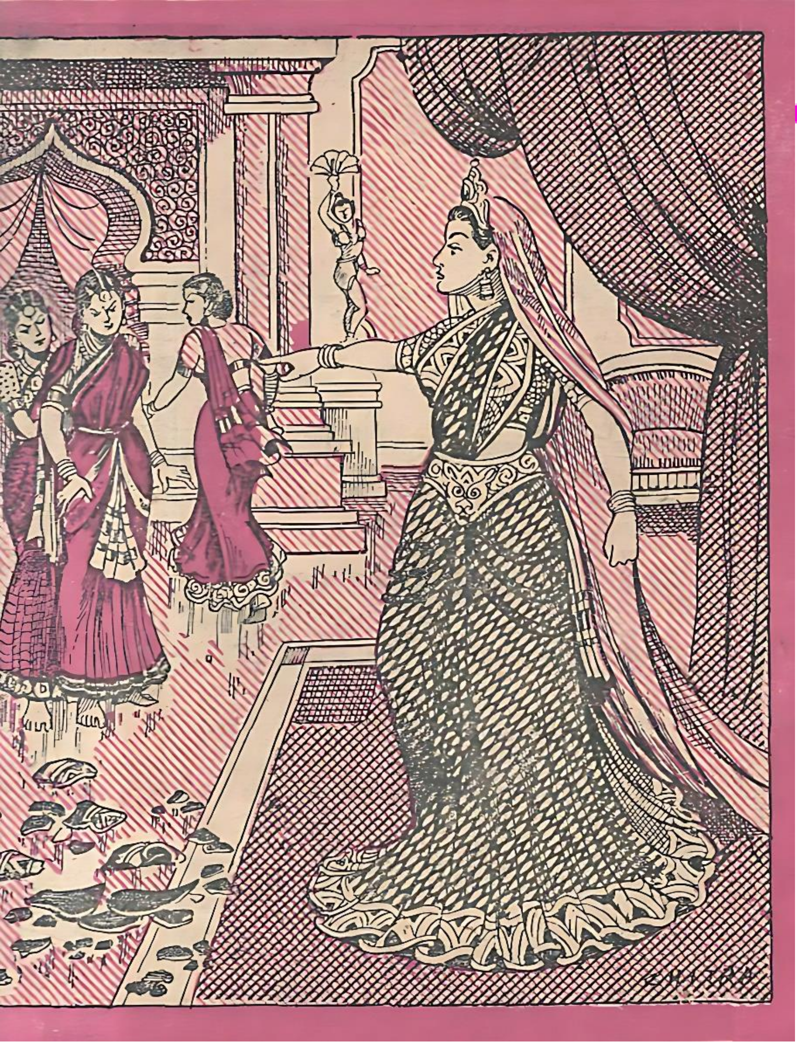

खोया फिरने लगा। वह न खाता, न पीता न सोता। आखिर वह अपनी राज-पोशाक छोड़, मामूली कपड़े पहन मगध के लिये चल पड़ा। वह प्रभावती के मन का लगा घाव भरना चाहता था, ताकि वह उस पर तरस खाये, और उसको उस पर दया आ जाय।

मगध पहुँचकर वह रात के समय राज-महल के पास गया। वहाँ बैठ बाँसुरी पर एक करुणा भरा राग गाने लगा। गाना सुन प्रभावती ने पहचान लिया कि उसका पति ही गा रहा था। एक समय था, जब कि प्रभावती उसकी बाँसुरी सुनकर तन्मय हो उठती थी। अब उसको वह ध्वनि काटती-सी लगती थी ; बल्कि उसे बहुत गुस्सा आया।

कुश ने एक और तरीके से पत्नी के पास सन्देश भेजने का निश्चय किया। उसने एक कुम्हार के पास जाकर कहा-"दादा! मैं तेरे बनाये घड़ों पर सुन्दर से सुन्दर रङ्ग लगाऊँगा। उनको ले जाकर क्या तू राजमहल में दे सकेगा?"

"अगर तेरी कारीगरी अच्छी रही, तो ज़रूर बेटा।" कुम्हार ने कहा।

कुश की कारीगरी कोई मामूली न थी। उसके लगाये हुये रङ्ग, और घड़ों पर बनाये हुये चिन्हों को देखकर राजा ने प्रशंसा की। उनको खरीदकर उसने अपनी लड़कियों को उपहार में दे दिया। बाकी राज कुमारियाँ घड़ों को देखकर बहुत आनन्दित हुईं। परन्तु प्रभावती घड़े पर अपना चित्र देख गुस्से से जल उठी। उसको मालूम हो गया कि वह उसके पति का काम था। उसने तत्क्षण घड़े को टुकड़े टुकड़े करवाकर दूर फिंकवा दिये।

इस बार कुश ने पत्नी के पास पहुँचने का एक और उपाय सोचा। राजा के

रसोइये के पास जाकर उसने कहा- "बाबू ! मैं नये नये पकवान बनाकर राजा का मन खुश कर सकता हूँ। मेरे पकवानों का स्वाद चख तुम्हें इनाम भी दिये जायेंगे। मैं कुछ वेतन नहीं चाहता। मुझे तुम्हारे यहाँ काम करने दो।" रसोइया मान गया।

अगले दिन नये नये पकवानों को देख कर राजा बड़ा खुश हुआ। उसने तुरन्त हुक्म दिया कि पकवानों को अन्तःपुर में पहुँचाया जाय। कुश स्वयं सोने के थाल में उन्हें रख अपनी पत्नी के पास गया।

प्रभावती ने अपने पति को पहचान लिया। वह उसके लिये इतना कुछ कर रहा है, यह सोचकर भी उसके मन में उसके लिये दया न पैदा हुई।

"तेरे हाथ का बनाया हुआ भोजन मुझे नहीं चाहिये। किसी दूसरे के हाथ भेज।" प्रभावती ने बड़े कड़वे ढङ्ग से कहा।

पत्नी का दिल पत्थर का हो गया है। कुश ने समझा कि वह उसको पिघाल न पायेगा। मगध छोड़, काशी जा उसने सन्यास ग्रहण करना चाहा।

जब वह यह सोच ही रहा था कि राजधानी में एक बुरी खबर फैली। कोई सात राजा मगध पर हमला कर रहे थे।

यह जान कि प्रभावती बहुत सुन्दर है और उसने अपने पति को छोड़ दिया है, सुना गया कि इसलिये वे उससे शादी करने के लिये चले आ रहे हैं।

यह बात सुन मगध का राजा घबरा उठा। वह अपनी एक सेना से भला सात सेनाओं का कैसे सामना करे? अगर वह प्रभावती का पुनः विवाह करने को मान भी

जाय तो सात राजा थे। अगर किसी एक से भी शादी की, तो छह शत्रु बनते थे। इसलिये राजा ने मन्त्री, सेना नायक, पण्डितों को बुलवाकर उनकी सलाह माँगी।

सच पूछा जाय तो राज महल में प्रभावती का किया हुआ काम किसी को पसन्द न था। अतः मन्त्री ने राजा से कहा-"महाप्रभू! इस आफ़त से निकलने का बस एक ही मार्ग है। राजकुमारी प्रभावती को सात भागों में काटकर, हमला करने वाले राजाओं को एक एक टुकड़ा उपहार में भेज दीजिये। सब के सब वापिस चले जायेंगे। देश में युद्ध का भय भी इस तरह जाता रहेगा।"

मन्त्री और पण्डितों की दी हुई सलाह को सुनते ही कुश का पारा चढ़ गया। "युद्ध के डर के मारे ये सब के सब मेरी पत्नी की बलि देंगे?"

रसोइये की पोशाक में कुश ने राजा के पास जाकर कहा-"महाराज ! आप इन डरपोकों की सलाह पर मत चलिये। आप अपनी सेनायें मुझे दीजिये। मैं सब शत्रुओं को जीत लूँगा।"

मगधराज को आश्चर्य हुआ।

"मेरी सेनाओं का भला एक रसोइया कैसे सेना नायक हो सकता है ?" राजा ने पूछा।

"महाराज ! मैं रसोइया नहीं हूँ। आपका बड़ा दामाद हूँ। पत्नी को खुश करने के लिये ही मैंने इतने कष्ट सहे। क्या मैं उसकी प्राणरक्षा के लिये युद्ध में मर नहीं सकता ?"

राजा ने अपने दामाद की उदारता की प्रशंसा की। सेना तैयार कर कुश के साथ युद्धभूमि में भेज दी।

यह सुनते ही प्रभावती का पत्थर-दिल भी पिघलकर बहने लगा। इतने उदार

पति के साथ उसने कैसा नीच वर्ताव किया ? वह पति, जो उसकी प्राण-रक्षा के लिये युद्ध में अपने प्राण न्योछावर करने के लिये जब जा रहा हो, तो वह अपने पश्चात्ताप का रोना किसके सामने सुनाये?

प्रभावती रात-दिन रोती रहती। परन्तु कुश को युद्धभूमि में कोई खतरा न पहुँचा। क्योंकि आक्रमण करनेवाले सातों राजा कुश के परम मित्र थे। जब वह मिथिला छोड़कर चला गया और उसका कुछ पता कहीं न लगा, तो वे सब घबरा उठे थे।

वे अपनी सेनाओं को लेकर प्रभावती को नीचा दिखाने आये थे, जिसने उनके परम मित्र कुश की इतनी दुर्गति की थी। पर युद्धभूमि में मगध राजा की जगह कुश को पा, उनके आश्चर्य आश्चर्य और आनन्द का ठिकाना न रहा।

जब कुश उनको लेकर महल में गया, तो प्रभावती के आनन्द की सीमा ही न थी। कुश ने सात राजकुमारों का मगध राजा के बाकी सात लड़कियों के साथ विवाह का प्रबन्ध कर दिया वे इस प्रबन्ध पर बड़े खुश हुये।

परन्तु यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि उनमें से एक भी अपने पति को देखकर उतनी प्रसन्न नहीं हुई होगी, जितनी प्रभावती अपने पति को देखकर।

प्रभावती ने पति के पावों पड़ अपनी गलतियों के लिये क्षमा माँगी। उसे यह समझ में नहीं आ रहा था कि कुश उसकी आँखों के लिये आखिर क्यों बदसूरत दिखाई दिया।

अब जब वह कुश का मुँह देखती, तो उसको लगता कि उसके पति जितना सुन्दर संसार में कोई नहीं है।

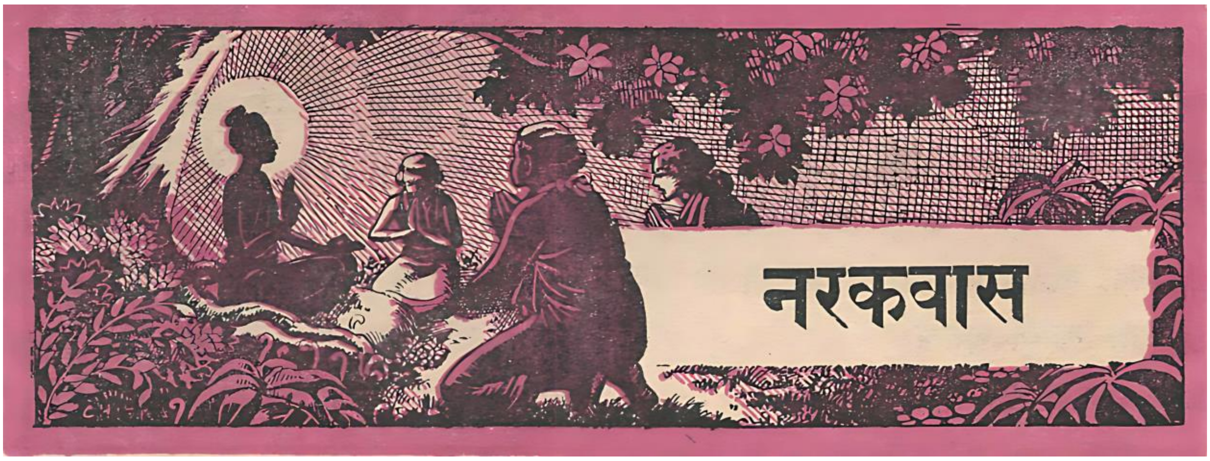

ब्रह्मदत्त जब काशी का परिपालन कर रहा था, तब बोधिसत्व वानर के रूप में पैदा हुये। उस वानर का नाम था 'नन्दीय'। नन्दीय का एक भाई था। दोनों भाई हिमालय में अस्सी हज़ार बन्दरों के झुन्ड़ के नायक थे। माँ के भरण-पोषण का भार नन्दीय पर था। वह बिचारी अन्धी थी। नन्दीय और उसका भाई, जङ्गलों में चुन चुनकर फलों को ला झुन्ड में से एक सेवक द्वारा माँ के पास भेजा करते थे। परन्तु वह सेवक धोखेबाज़ था। वह स्वयं ही फल खा जाता था। माँ तक फल पहुँच ही नहीं पाते थे।

एक बार नन्दीय माँ को देखने आया। देखकर वह चकित रह गया। उसने पूछा-"क्यों माँ! इतनी कमज़ोर हो गयी हो, जैसे खाना ही न मिलता हो ? रोज़ हमारे भेजे हुए फल नहीं खा रही हो?"

"नहीं बेटा, न फल मिलते हैं, न कुछ और मिलता है। अगर खाने को मिलता, तो मैं भला यो कमज़ोर क्यों होती?" माँ ने कहा।

नन्दीय ने खूब सोचा। उसे सच मालूम हो गया। उसने झट भाई के पास जाकर जो कुछ गुज़रा था, कह सुनाया। "भाई! मैं घर में रहकर माँ की देखभाल करूँगा। तू नायक बनकर इस झुन्ड पर राज्य कर।"

तब छोटे भाई ने कहा-"भैय्या! मैं भी तेरे साथ रहकर घर में माँ का पोषण करूँगा।" इस तरह दोनों मिलकर घर गये । माँ के लिये पीपल के पेड़ पर एक बसेरा बनाया। उसकी हर सुविधा का ख्याल करते हुये वे रहने लगे। परन्तु इस बीच में-

कोई ब्राह्मण तक्षशिला नगर में एक प्रख्यात गुरू के पास शिक्षा पा रहा था।

विद्याभ्यास के समाप्त होने पर, गुरू के पास जाकर उसने जाने की आज्ञा माँगी।

गुरू ने शिष्य से कहा-"बेटा, हमें प्रसन्नता होती है कि तुमने विद्या पूरी कर ली है। तुम्हारा ज़रा तेज़ स्वभाव है। जल्दबाज़ी में कोई क्रूर काम न करना। बाद में पश्चात्ताप करने से भी फ़ायदा न होगा। यही मेरा उपदेश है।" गुरु ने शिष्य को आशीर्वाद दिया।

ब्राह्मण गुरु की आज्ञा ले काशी नगर पहुँचा। उसका विवाह हुआ। उसने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया। उसे आजीविका का कोई भी मार्ग न दिखाई दिया। इसलिये धनुष-बाण ले, वह शिकारी का काम करने लगा। जन्तुओं और पक्षियों का शिकार कर, उनका मांस बेचकर जो पैसे मिलते, उनसे घरबार चलाया करता। यही उसका रोज़ का काम था। एक दिन-

वह खूब घूमा-फिरा, परन्तु उसको एक जानवर भी न दिखाई दिया। जब वह घर वापिस जा रहा था, तो उसकी नज़र पीपल के पेड़ की ओर गई। उसी समय पेड़ के खोखले में

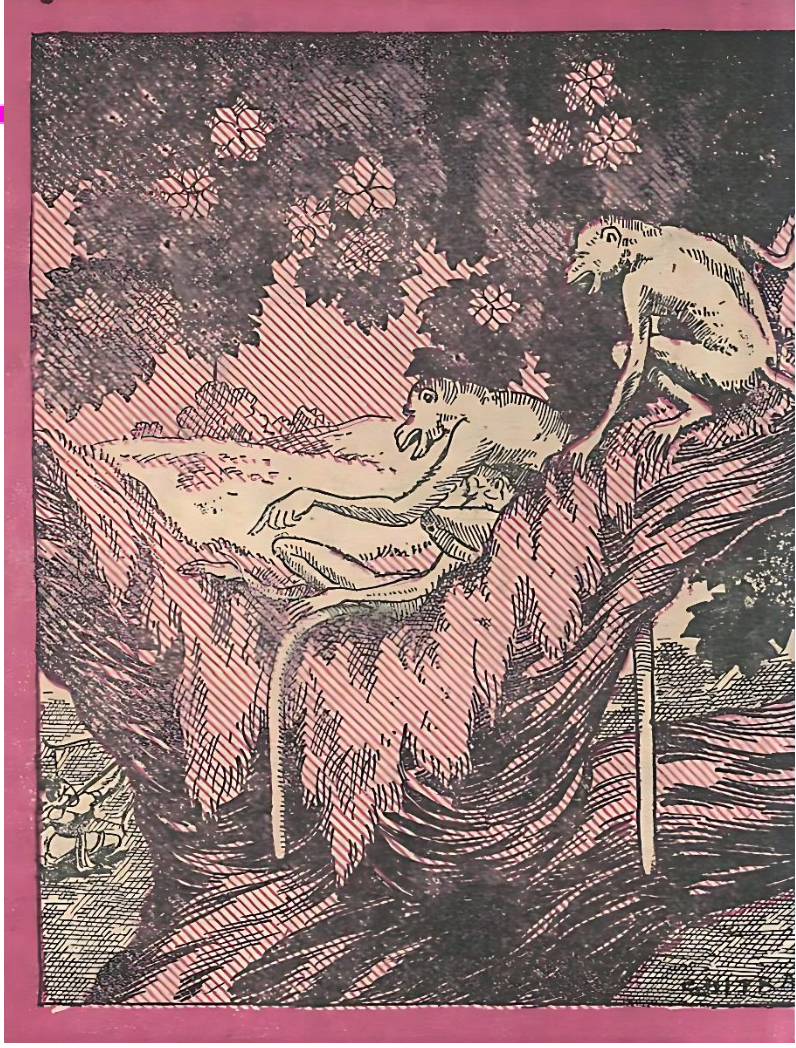

माँ को फल आदि, खिला उसके पीछे नन्दीय ओर उसका भाई आराम से बैठे हुये थे। उन्होंने शिकारी को देखा।

तब पेड़ की ओर देखते हुये शिकारी ने सोचा कि खाली हाथ घर क्यों जाया जाय ? उसने नन्दीय की माँ को निशाना बनाना चाहा। नन्दीय ने यह देखा। तुरन्त उसने भाई से कहा -"देख, वह माँ को निशाना बनाकर बाण छोड़नेवाला है। मैं उसके प्राण बचाऊँगा। मेरे मर जाने के बाद यह जिम्मेवारी तेरी रही।" कहता कहता वह जल्दी जल्दी पेड़ पर से उतरा।

"ओ शिकारी! मेरी माँ को मत मार। वह बूढ़ी है। उसके बदले मुझे मार ले।" नन्दीय ने कहा। वह पत्थर का दिलवाला शिकारी यह मान गया। "ठीक है" कहते हुये उसने क्रूरता से नन्दीय पर बाण छोड़ा।

परन्तु शिकारी ने अपने वचन का पालन न किया। नन्दीय के मरते ही उसने फिर उसकी माँ को मारने के लिये निशाना ठीक किया। यह देख इस बार छोटा भाई पेड़ से उतरकर आया और शिकारी से वही कहा, जो उसके भाई ने कहा था। शिकारी इस बार फिर मान गया, और उसने निर्दय हो छोटे भाई को भी मार दिया।

"मेरे लिये और मेरे कुटुम्ब के लिये ये दो बन्दर काफ़ी हैं।" शिकारी ने सोचा। परन्तु दूसरे क्षण उसका दिल बदल गया। बिना किसी पाप-भय के, उस हत्यारे शिकारी ने उनकी बूढ़ी माँ को भी अपने बाण से मार गिराया। इस तरह वह उन तीनों बन्दरों को एक डण्डे में लटका कर, कन्धे पर रख घर की ओर चला। जब वह अपने गाँव के पास पहुँचा तो उसको पता लगा कि उसके घर पर बिजली गिर पड़ी है, और उसमें उसकी पत्नी और दो बच्चे जल-भुनकर मर गये हैं।

यह बात पता लगते ही वह छाती पीटता पीटता घर की ओर भागा। ज्योंही उसने साहस करके अन्दर जाना चाहा, त्योंही वह जहाँ खड़ा था, वहाँ भूमि फट गई। उसे पाताल में जाते हुये यह बात याद आई-

"मेरे गुरु ने उसी दिन उपदेश दिया था कि क्रूर-कार्य न करना। पश्चात्ताप करने से भी कोई फ़ायदा न होगा। मैं अपने किये हुये पापों का फल भोग रहा हूँ।" सोचता सोचता वह नरक की ओर बढ़ता गया। फिर वह किसी को न दिखाई दिया।

एक दिन सबेरे फ़ारस का बादशाह अपने वज़ीर के साथ टेग्रिस नदी के किनारे घूमने निकला। उन्होंने नदी में मछलियाँ पकड़ते हुये एक बूढ़े को देखा।

"अरे ! बुढ़ापे में तुम्हें भला यह नौबत कैसे आ पड़ी? रोज़ कितनी मछलियाँ पकड़ते हो? कितना पैसा कमाते हो?" बादशाह ने बूढ़े से पूछा।

"बुढ़ापा है, महाराज ! अगर मेहनत न करूँ तो एक दिन भी गुज़ारा न हो। सबेरे से जाल फेंक रहा हूँ, पर अभी तक एक मछली भी नहीं फँसी है।" बूढ़े ने कहा।

"इस बार जाल फेंको। उसमें जो कुछ फँसेगा, उसको सौ दीनारें लेकर हम खरीद लेंगे।" बादशाह ने कहा।

बूढ़े ने जगह बदलकर जाल फेंका। जाल में एक बड़ा सन्दूक फँसा। बादशाह ने बूढ़े को सौ दीनारें दीं। तुरन्त नौकरों से सन्दूक ढुवाकर अपने राजमहल में ले गया।

बादशाह यह देखने के लिये उतावला होने लगा कि उस सन्दूक में क्या है। इसलिये वह सन्दूक को अपने निजी कमरे में ले गया। वज़ीर की मदद से सन्दूक खोला। तुरन्त वे चकरा गये। वे देखते क्या हैं कि उस सन्दूक में एक युवती है। उसका शरीर खून से तरबतर है।

जब उसने गौर से देखा तो मालूम हुआ कि वह स्त्री पूरी तरह न मरी थी, कहीं प्राण अटका हुआ था। उसके सिर पर जबर्दस्त घाव था। उसी में से खून बह रहा था।

बादशाह ने अपने हकीम को बुलाकर पूछा-"क्या उस स्त्री को जिलाने की गुञ्जाइश है?" हकीम ने कहा -"वह

कमला प्रसाद रस्तोगी

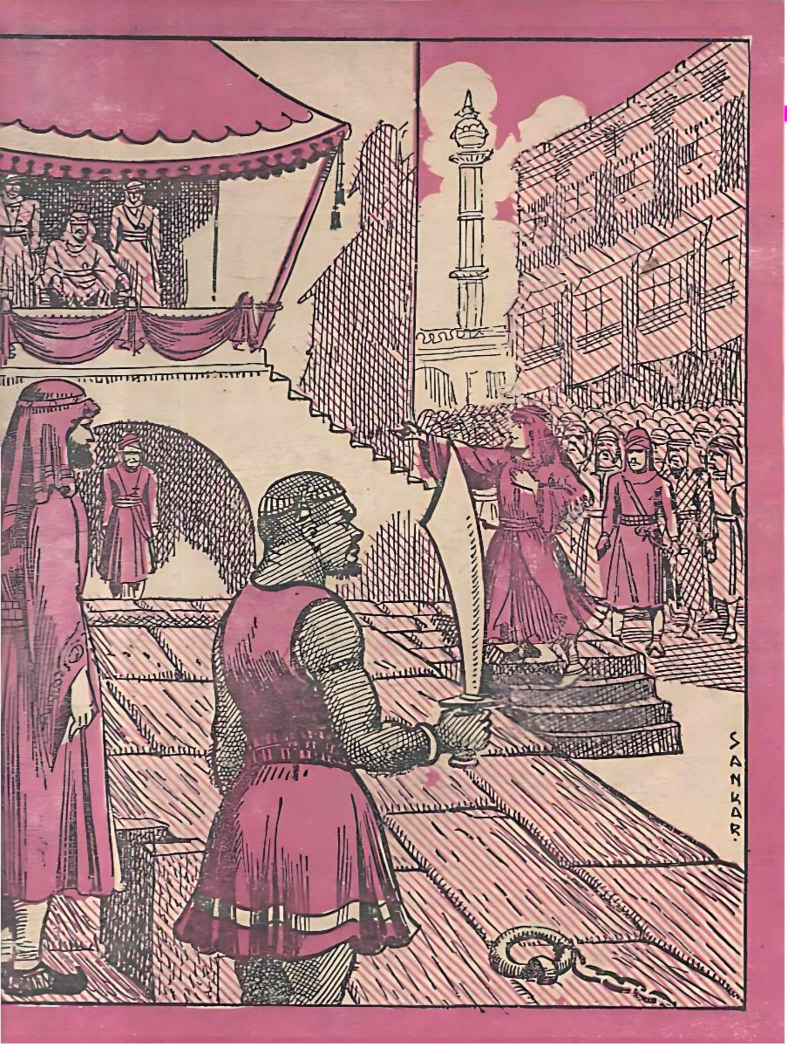

भरसक कोशिश करेगा ; मगर उसके जिन्दा रहने की उम्मीद कम ही है।"

बादशाह ने यह जानना चाहा कि यह स्त्री कौन है, उसको इस तरह मारकर, सन्दूक में रखकर नदी में डालनेवाला कौन हत्यारा है। वज़ीर ने सिपाहियों को शहर में भेजा। पर किसी को कुछ पता न लगा।

अगले दिन वज़ीर और बादशाह ने मिलकर एक चाल सोची। बादशाह ने शहर में यह ढिँढोरा पिटवा दिया:-

"परसों रात को किसी दुष्ट ने एक युवती की हत्या कर, उसके शव को एक सन्दूक में रख टेग्रिस नदी में फेंक दिया। उस हत्यारे को पकड़ने के लिये हमने वज़ीर को एक रोज़ का वक्त दिया। पर वह कामयाब न हुआ। वह हत्यारे को न पकड़ सका। इसलिये शहर के चौक में, सब लोगों की हाज़िरी में वज़ीर का सिर कटवा देने का हम हुक्म दे रहे हैं। जनता आकर यह सब कुछ खुद देख सकती है।"

उस दिन चौक में हज़ारों आदमी इकट्ठे हुये वज़ीर के हाथ पीठ पीछे बाँधकर जल्लाद उसको वध्यस्थल पर लाये। उसी समय भीड़ में से एक व्यक्ति सामने आया और कोतवाल से गिड़गिड़ाकर कहने लगा-"हुजूर! हत्यारा मैं हूँ। वज़ीर को छोड़ दीजिये। मेरा सिर कटवाइये।"

कोतवाल वज़ीर को छोड़कर उस नौजवान को साथ लेकर सीधा बादशाह के पास गया।

"तू ही हत्यारा है क्या? तो वह तेरी क्या होती है? उसने धोखा तुझे कैसे दिया ?" बादशाह ने उस नौजवान से पूछा। नौजवान की आँखों में से आँसू बहने लगे। वह यों कहने लगा:-

"हुजूर ! वह स्त्री मेरी पत्नी है। बहुत ही पतिव्रता है। मैं ही पापी हूँ। जल्द-

बाज़ी में मैंने उस पर सन्देह किया और उसको मार दिया। उसके लिये खुदा मुझे सज़ा दे रहा है। मैं पछता-पछता कर जला जा रहा हूँ।"

"मेरी पत्नी हाल में बीमार पड़कर फिर स्वस्थ हो रही थी। उस समय उसे आम खाने की इच्छा हुई। कुछ भी हो, उसकी इच्छा को पूरा करने के लिये मैं शहर भर घूमा। क्योंकि उन दिनों आम की मौसम न थी, इसलिये आम मुझे न मिला।"

"मालूम हुआ कि बागदाद जाने पर शायद वहाँ मिल जाय। पत्नी की इच्छा पूरी करने के लिये मैं बागदाद गया, और काफ़ी दौड़-धूप के बाद तीन लँगड़े आम खरीद लाकर उसको दिये। मेरी पत्नी बड़ी खुश हुई। उसने कहा कि रात को उन्हें खायेगी। उस दिन शाम को जब मैं दूकान में बैठा हुआ था, तो एक गुलाम ने एक आम दिखलाकर पूछा-"इस तरह के आम कहीं न मिलेंगे, खरीदोगे?" उस आम को देखने से लगता था कि मेरे लाये हुये आमों में से एक हो। 'यह तू कहाँ से लाया?' मैंने पूछा। उस गुलाम ने तब मुझ से कहा-'हुज़ूर! एक स्त्री मुझे

बहुत पसन्द करती है। उसी ने ही मुझे यह फल दिया है। उसका पति उसके लिये बागदाद से यह फल लाया था। क्या आपको चाहिये?'

उसकी बात पर मैं यकीन न कर सका। मेरी पत्नी तो इतनी गई-गुज़री नहीं है। फिर भी सच जानने के लिये झट दूकान बन्द कर घर गया। घर में दो ही आम थे, तीसरे आम के बारे में पूछने पर मेरी पत्नी का चेहरा उतर आया। उसने कहा कि उसे कुछ न मालूम था। गुलाम की बात पर मुझे विश्वास हो गया। न मैंने

आगे देखा, न पीछे। एक बड़ा डण्डा लिया, और पत्नी के सिर पर ज़ोर से दे मारा। डण्डे की चोट से वह वहीं देर हो गई। घर के एक पुराने सन्दूक में उसका शव रखकर अन्धेरा हो जाने पर, सन्दूक को नदी में फेंक, घर वापिस आ गया। जब मैं घर में घुस रहा था, बाहर दरवाज़े के पास किसी लड़के का हिचकियाँ भर भरकर रोना मुझे अन्धेरे में सुनाई दिया। जब पास जाकर देखा तो वह मेरा लड़का ही था।

"इस अन्धेरे में बाहर क्यों बैठा हुआ है? क्यों रो रहा है?" मैंने उससे पूछा। तब वह कहने लगा-"माँ के रखे हुये आमों में से एक को लेकर मैं गली में आया। तब एक गुलाम ने मुझे देखकर पूछा-'तुझे यह फल कहाँ से मिला?' मैने कहा कि 'मेरे पिताजी, माताजी के लिये बागदाद से लाये हैं। मैं माँ के बिना जाने एक उठा लाया हूँ।' गुलाम ने पूछा-'क्या तुम्हें ऐसा करना चाहिये था? वह आम मुझे दे दो। नहीं तो अभी जाकर तुम्हारी माँ से कह दूँगा।' मैंने डर कर उसको आम दे दिया। घर में गया तो माँ मुझे पीटेगी। मुझे डर लग रहा है।" लड़के ने कहा।

मुझे बिना किसी कारण के पत्नी को मारने का बड़ा रञ्ज हुआ। लड़के को देखकर तो वह दुःख दस गुना हो गया। सबेरे से उस गुलाम को खोज रहा हूँ। अगर वह मुझे दिखाई देता तो मैं उसका काम तमाम कर देता। सिर तो उसका कटवाया जाना चाहिये। जब निष्कारण वज़ीर साहब को सज़ा दी जाने लगी, तो मैं चुप न रह सका। जो कुछ गुज़री थी, मैंने कह सुनाई। मुझे सज़ा देकर, मुझ जैसे जल्दबाज़ों को सबक सिखाइये।" नौजवान ने कहा।

यह तो ज़ाहिर है कि तुझे अपनी पत्नी पर प्रेम है। नहीं तो उसकी इच्छा पूरी करने के लिये बागदाद जाकर आम न लाया हुआ होता। तेरी पत्नी का कसूर है, यह सोचकर ही तूने उसका कत्ल किया है। तुझे यह विश्वास चार आने के लालच से उस गुलाम ने ही झूठ बोलकर करवाया था। इसलिये सज़ा उसको मिलनी चाहिये। तुझे छोड़े देता हूँ। तेरे लड़के के पास से आम ले तेरे पास बेचनेवाले गुलाम को हम सज़ा दे सकते हैं। तू जा सकता है।" बादशाह ने कहा।

"हुजूर ! अगर आप उस गुलाम को सज़ा देना चाहते हैं, तो मैं एक घड़ी भी जिन्दा नहीं रहना चाहता। पछतावा मुझे जला रहा है। मौत की सज़ा देकर मुझे इस दर्द से छुटकारा दिलवाइये।" नौजवान ने फ़रियाद की। मगर बादशाह ने न माना।

एक बेकसूरवार स्त्री के बारे में झूठी- मूठी अफवाह उड़ानेवाले को पकड़कर सज़ा देनी ही चाहिये। उसे हमें कैसे पकड़ना चाहिये, यह सोचता-सोचता वज़ीर अपने घर गया।

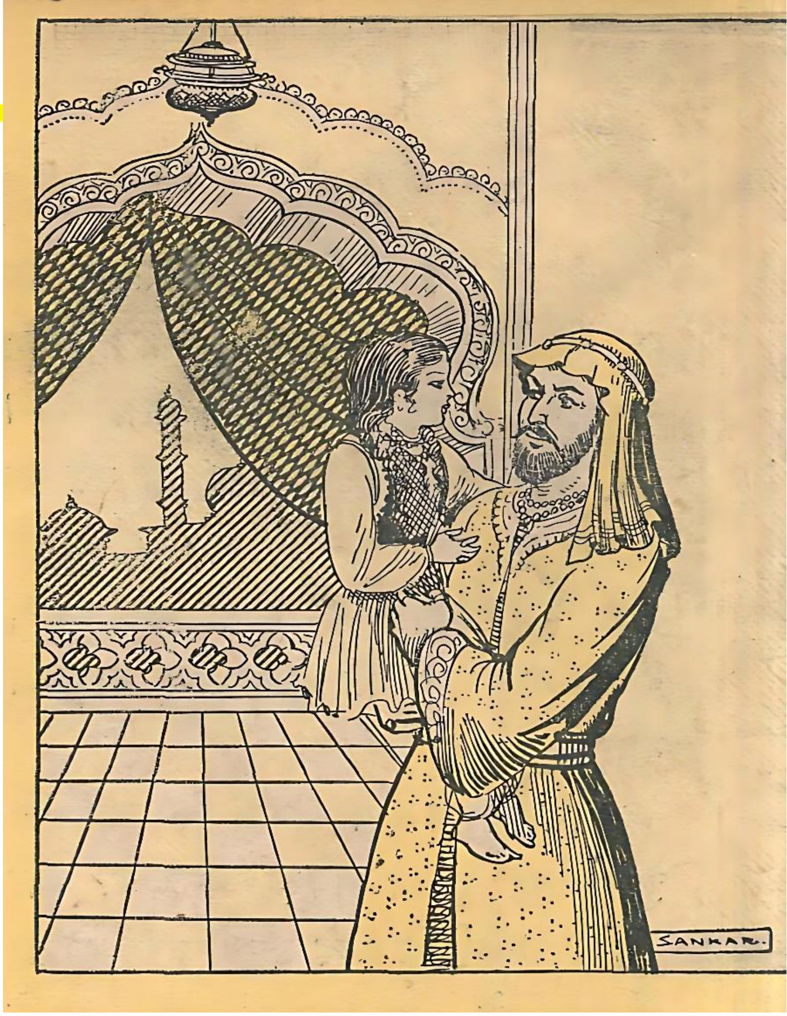

वज़ीर ने ज्योंही घर के दरवाज़े पर कदम रखा तो उसकी पोती हाथ फैलाकर-'बाबा' कहती दौड़ी-दौड़ी आई।

वज़ीर ने प्रेम से उठाकर उसको चाहा तो उसके मुख से आम की खुशबू आई। उसने अचम्भे में पूछा- "तुझे आम कहाँ से मिला?"

गुलाम रहीम ने दिया था। बाबा, उसे आम, सुना है, कहीं मिल गया था।" वज़ीर की पोती ने कहा।

जल्दी ही चोर पकड़ा गया। जब वज़ीर ने उसे बुलाकर डराया धमकाया, तो रहीम

ने कहा कि उसी ने झूठी बातों से फुसला कर बच्चे से आम लिया था। उसी ने दूकान में झूठी बातें कह उसे बेचना चाहा था। जब वह उसे बेच न सका तो उसे घर लाकर पूरा एक रोज़ रखा। अगले दिन थोड़ा वज़ीर की पोती को देकर, बाकी वह खुद खा गया था। वह सब मान गया।

नौजवान को खबर मिली कि आम को चुरानेवाला गुलाम पकड़ा गया है, और उसकी सुनवाई के लिये उसको तुरन्त हाज़िर होना चाहिये। वह दरबार में गया। उसने गुलाम को पहचान लिया। उसी ने उसको आम बेचना चाहा था।

"सुनवाई पूरी होने के लिये एक और गवाही की ज़रूरत है। तुम्हें मुरदे को पहचानना होगा।" बादशाह ने नौजवान से कहा।

यह सोचकर कि यही उसके लिये ठीक सज़ा है; नोज़वान बादशाह के साथ एक कमरे में गया।

जब उसने एक बिस्तरे पर अपनी पत्नी का शरीर देखा तो उसके दिल से दुःख फूटने लगा।

परन्तु जब आँखें देखकर खोलकर उसकी ओर वह धीमे धीमे मुस्कराई तो उसके आश्चर्य और आनन्द की सीमा न थी। वह उसके पैरों पड़ अपनी जल्दबाजी के लिये रो रोकर माफ़ी माँगने लगा।

बादशाह ने भी रहीम को कोई सख्त सज़ा न दी।

क्योंकि रहीम ने उस लड़के को डरा-धमकाकर आम तो ले लिया था, पर उसको यह न मालूम था कि वह उस लड़के के पिता के सामने ही वह आम बेचने की कोशिश कर रहा था।

वत्स राज्य का उदयन राजा था। कौशाम्बी उसकी राजधानी थी। यौगन्धराय उसका प्रधान मन्त्री था। उदयन नौजवान और सुन्दर था। वीणा बजाने में बहुत प्रवीण था। उसके पास घोषवती नाम की प्रसिद्ध वीणा थी।

राज-कार्य मन्त्रियों को सौंपकर उदयन वीणा की सहायता से जङ्गल में हाथियों को फँसाने में अपना समय काटता। जब वह जङ्गल में बैठकर वीणा बजाना शुरु करता तो हाथियों के झुण्ड मुग्ध हो, उसके पास आ जाते और वह उनको पकड़वा देता। यह सोचकर कि उसके अनुकूल कोई सुन्दर कन्या नहीं है, उदयन ने विवाह भी नहीं किया था।

परन्तु हर दृष्टि से उसके योग्य एक कन्या थी; उज्जयिनी के राजा चण्डमहासेन की कन्या वासवदत्ता।

परन्तु बहुत दिनों से उज्जयिनी और कौशाम्बी के राजाओं में पारिवारिक शत्रुना चली आ रही थी। चण्डमहासेन की अपनी कन्या की शादी उदयन से करने की इच्छा तो थी, पर उदयन से इस विषय में बातचीत करना वह अपनी शान के खिलाफ़ समझता था। इसलिये उसने एक तरीका ढूँढ़ निकाला। दूतों द्वारा उसने उदयन को खबर भिजवाई-"आप हमारे घर आकर हमारी लड़की को वीणा बजाना सिखाइये।"

उसका निमन्त्रण पाते ही उदयन आग बबूला हो उठा। परन्तु मन्त्रियों की सलाह पर अपना गुस्सा रोक उसने यों जवाब लिख भेजा :-

"अगर आपकी लड़की को मुझ से वीणा सीखने की इच्छा है, तो उसे आप कौशाम्बी भिजवा दीजिये।"

एस. के. निगम

चण्डमहासेन का विश्वास था कि जब उदयन वासवदत्ता को वीणा बजाना सिखाना शुरू कर देगा, तो वह उससे प्रेम करने लगेगा।

परन्तु अपनी लड़की को उदयन के पास भेजना वह अपनी कुल-मर्यादा के विरुद्ध समझता था। इसलिये उसने जैसे-तैसे अपने होनेवाले दामाद को उज्जयिनी लिवा लाना चाहा।

उसने दुनिया में सबसे बड़ा एक कृत्रिम हाथी बनवाया। उसके पेट में चण्डमहासेन के सैनिक छुपकर बैठ गये। उस हाथी को रात के समय कौशाम्बी के पासवाले राज्य में रख दिया। उदयन के पास अगले दिन खबर पहुँची कि उसके जङ्गल में कोई एक बहुत बड़ा हाथी चर रहा है। उदयन नौकर-चाकर के साथ उसको पकड़ने के लिये निकल पड़ा। भला उसको बिना पकड़े, उसे नींद कैसे आती? दूरी पर उसने जङ्गल में हाथी देखा। उसे लगा, जैसे वह सूँड और पूँछ हिला रहा हो। बड़े से बड़े हाथी भी उसके सामने बच्चे से लगते थे। पर वह हाथी बहुत विशाल था।

उतने बड़े हाथी को अपने सङ्गीत द्वारा उदयन ने पकड़ना चाहा। वह वीणा बजाने लगा।

वह शाम तक लगातार वीणा बजाता रहा, पर वह हाथी सिर्फ़ दस-पाँच गज़ ही पास आया। अगर वहीं बैठ वह वीणा बजाता रहता तो थोड़ी देर में अन्धेरा हो जाता; इसलिये वह वीणा बजाता हुआ हाथी के पास गया। उसके नौकर-चाकर दूर ही खड़े रह गये। जब उदयन हाथी के पास पहुँचा तो कृत्रिम हाथी के पेट से सैनिक बाहर निकले और वे उदयन को बाँधकर उज्जयिनी की ओर भाग निकले। उदयसेन चण्डमहासेन का कैदी हो गया। परन्तु चण्डमहासेन ने किसी प्रकार

की उसको तकलीफ़ न होने दी। उसको हर प्रकार की सुविधा देकर वासवदत्ता के पास वीणा सिखाने के लिये भेजा। ज्योंही उदयन ने वासवदत्ता का मुँह देखा तो उसको लगा, मानो वह कैदी न हो। जब वह सामने बैठकर वीणा पर अभ्यास कर रही होती, तो उदयन उसको देखकर फूला न समाता।

जब कौशाम्बी नगर में यह मालूम हुआ कि उनका राजा कैदी कर लिया गया है, तो लोग उत्तेजित हो उठे। उज्जयिनी पर हमला करने के लिये लालायित होने लगे। दूरदर्शी यौगन्धराय ने लोगों को समझाया बुझया। उनको सब्र करने के लिये कहा।

"धोखे से हमारे राजा को वे पकड़कर ले गये हैं। मैं भी बुद्धि-बल से उनको छुड़वाकर लाऊँगा।" मन्त्री ने कौशाम्बी प्रजा को वचन दिया।

अगले दिन यौगन्धराय ने दूसरे मन्त्रियों को राज्य कार्य अच्छी तरह देखने के लिये कहा और स्वयं केवल वसन्तक को साथ लेकर निकल पड़ा। रास्ते में, विन्ध्य प्रदेश में पुलिन्दिक राज्य करता था। वह उदयन का घनिष्ट मित्र था। यौगन्धराय ने उसको

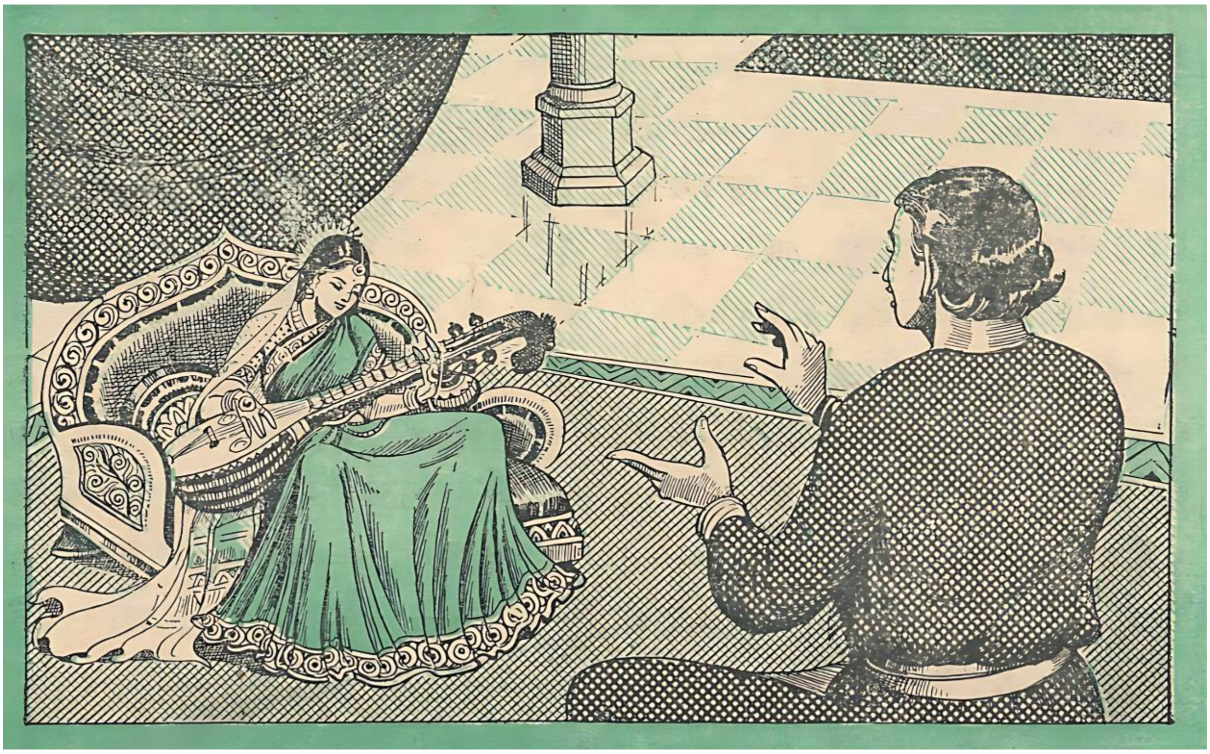

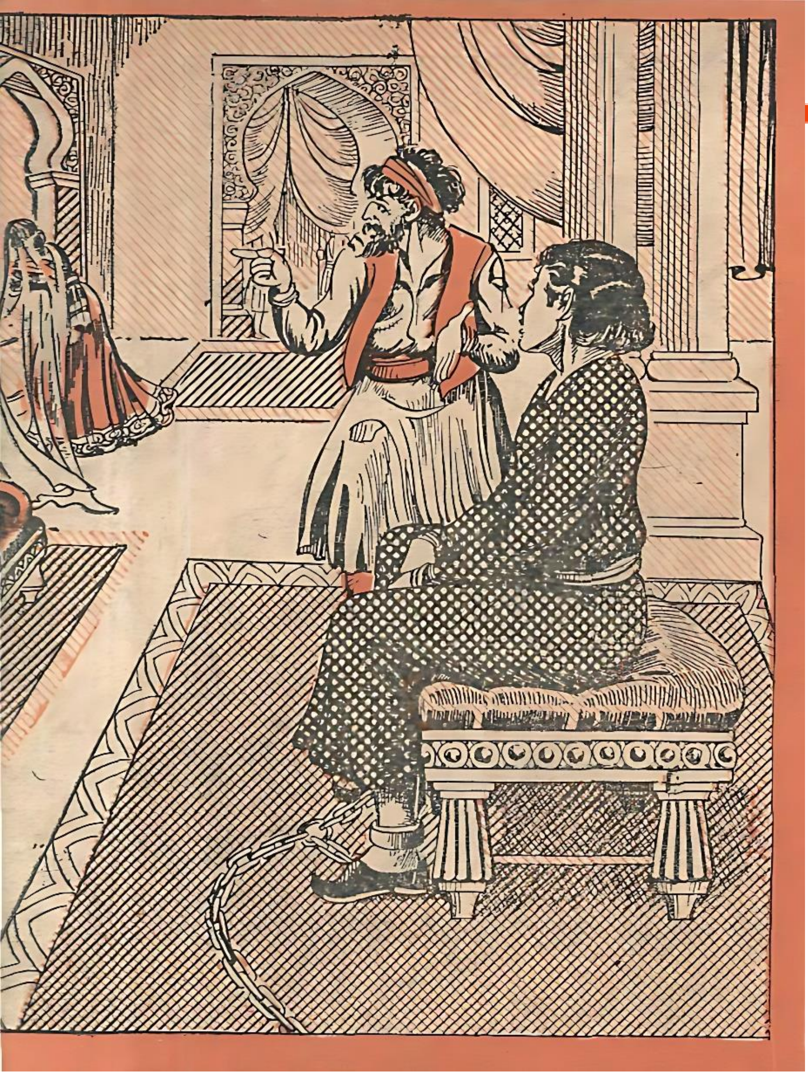

सारी घटना सुनाई। सैनिकों को सन्नद्ध कर, सावधान रहने के लिये उसको कह वह वसन्तक को लेकर उज्जयिनी की तरफ़ बढ़ा।

उज्जयिनी के पास महाकाल नामक श्मशान था। उसमें यौगन्धराय और वसन्तक ने अपना अपना वेश पूरी तरह बदल लिया। वसन्तक ने ऐसा वेष धरा, जिसे देखते ही, लोग हँस पड़ें। उसने जादूगर का रूप रखा। यौगन्धराय ने एक बिचारे पागल का वेष धरा।

वसन्तक पहले गया और राजमहल के सामने तमाशा दिखाने लगा। उसको देखने के लिये अन्तःपुर के नौकर-चाकर, दास-दासियाँ भी भागी भागी आईं। वासवदत्ता भी वीणा छोड़ उसको देखने के लिये बाहर गई। उस समय पागल का वेष धरे यौगन्धराय अकेले में बैठे उदयन के पास आया।

उदयन को कैद में देख यौगन्धराय की आँखों में अनायास आँसू छलक पड़े। आँसू देख उदयन ने उसे पहिचान लिया।

"राजा! अगर जैसे-तैसे आपने इस वासवदत्ता को अपनी तरफ़ कर लिया, तो मैं आपको इस कैद से बाहर ले जाऊँगा। इसलिये आप इसी कोशिश में रहिये। मैं फिर दिखाई दूँगा।" यह कह यौगन्धराय चला गया।

पहले से ही, उदयन और वासवदत्ता ने चोरी चोरी एक दूसरे से प्रेम करना शुरू कर दिया था। इसलिये वासवदत्ता को अपने पक्ष में करने के लिये उदयन को अधिक समय न लगा। मौका मिलते ही, बिना पिता को बताये ही उदयन के साथ भाग निकलने के लिये वासवदत्ता मान गई। चण्डमहासेन के पास जितने हाथी थे, उनमें सबसे अधिक तेज़ भद्रावती हाथी

था । उसके महाबत का नाम था आषाढ़क। भद्रावती को राजा ने पहिले ही वासवदत्ता को उपहार में दे रखा था। यौगन्धराय ने आषाढ़क को खूब रुपया-पैसा देकर अपनी तरफ़ कर लिया।

यौगन्धराय ने उदयन को कैद से छुड़ाने का उपाय सोचकर वसन्तक को बताया। वह स्वयं दो दिन पहले ही पुलिन्द नगर के लिये रवाना हो गया।

उस दिन रात को राजा के मुख्य महाबत को मन्त्री ने खूब पिलाया। वासवदत्ता ने उदयन को धनुष, बाण, तलवार, कटार, आदि, शस्त्र लाकर दिये। आधी रात के समय उदयन, वासवदत्ता, वसन्तक, भद्रावती हाथी पर चढ़कर भाग निकले। राज मइल में जिन जिन सैनिकों ने उनका रास्ता रोका, उदयन ने उनको मार दिया। नगर से बाहर जा, भद्रावती पुलिन्द नगर के रास्ते पर चलने लगा।

"कैदी उदयन हाथ से निकल गया है।" बचे-खुचे सैनिकों ने यह बात चण्डमहासेन को बतायी। तब तक काफ़ी समय हो चुका था। चण्डमहासेन हाथी पर चढ़, नौकर

चाकरों के साथ निकल पड़ा। परन्तु उसके पास ऐसा कोई हाथी न था, जो चलने में भद्रावती का मुकाबला कर सके।

जब उदयन आदि, विन्ध्य प्रदेश के पास पहुँचे, तो भद्रावती थककर चूर हो गया था। उसने खूब पानी पिया और वह अचानक मर गया। वहाँ से उदयन, वासवदत्ता, और वसन्तक पैदल ही पुलिन्द नगर की ओर बढ़े। रास्ते में उन्हें चोरों ने रोका। परन्तु उन्हें उदयन ने अपनी तलवार का शिकार बना दिया। वासवदत्ता कभी वैसी ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर

न चली थी। उसके पैरों में काँटे चुभ गये। जैसे तैसे वे सही-सलामत पुलिन्द नगर पहुँचे।

उसी समय उदयन की सहायता करने के लिये कौशाम्बी से वहाँ सेना पहुँच चुकी

थी। उन्होंने अपना शिबिर बना लिया था। वे युद्ध के लिये सन्नद्ध थे।

चण्डमहासेन से लोहा लेने के उद्देश्य से उदयन शहर में भी न गया। वहीं तम्बू में उनकी प्रतीक्षा करता रहा। उज्जयिनी की सेनाओं का मुकाबला करने के लिये ज़रूरी तैयारियाँ की गईं।

तब चण्डमहासेन ने दूत द्वारा उदयन के पास एक सन्देश भेजा, जो यों था :-

"राजा ! मुझे इसकी परवाह नहीं कि तुम मेरी लड़की को भगाकर ले गये हो। तुम दोनों का विवाह करने के लिये ही मैंने तुम्हें कैदी बनवाया था। इसलिये मैं चाहता हूँ कि तुम दोनों का विवाह विधि प्रकार सम्पन्न हो। यदि कुछ समय दिया गया तो मेरा लड़का स्वयं जा अपनी छोटी बहन का विवाह यथाविधि धूम-धाम के साथ करवायेगा।"

यह सन्देश पढ़ते ही उदयन बहुत ही सन्तुष्ट हुआ। मायकेवालों से तो अब कोई झगड़े की सम्भावना नहीं है, यह सोच वासवदत्ता भी बड़ी खुश हुई।

सब मिलकर कौशाम्बी नगर गये। वहाँ विवाह का शुभ मुहूर्त निश्चय किया गया। ज़ोर-शोर से विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। विवाह के अवसर पर वासवदत्ता का भाई गोपालक तरह तरह के कीमती उपहार लेकर आया। उदयन का मित्र पुलिन्दक और अनेक मित्र मय अपने दरबारियों के आये। उदयन और वासवदत्ता का विवाह बड़े धूमधाम से हुआ।

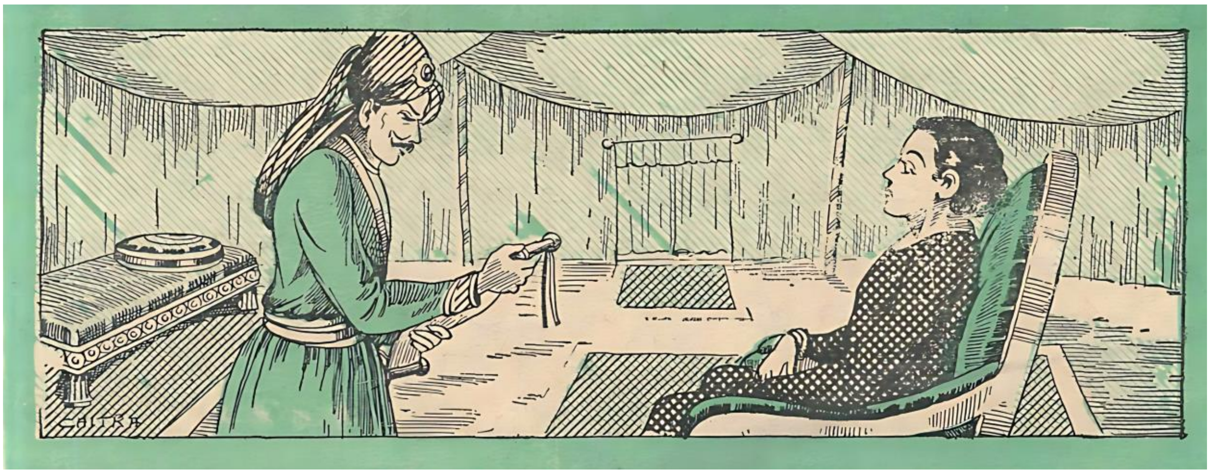

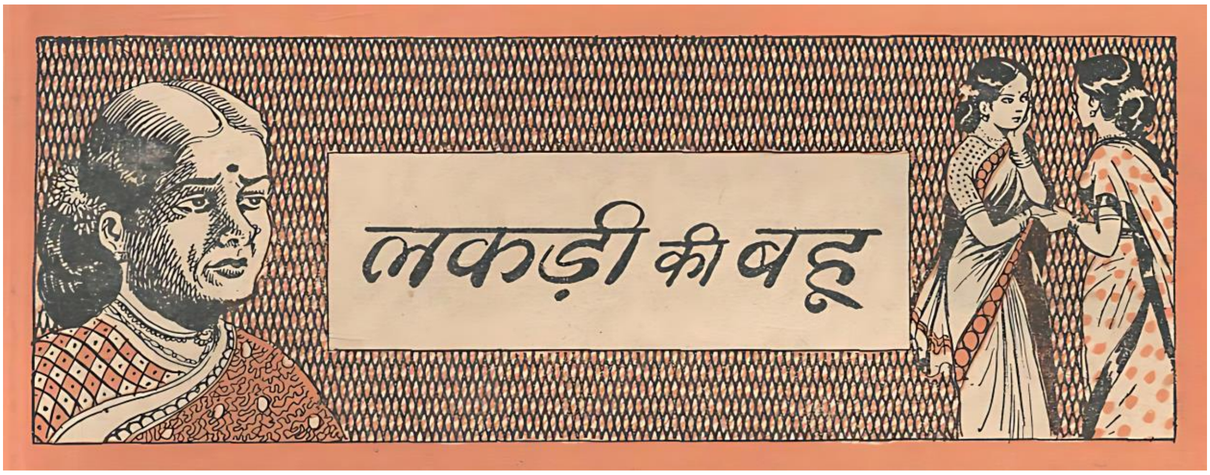

हस्तिनापुर में शिवदत्त नाम का एक अमीर ब्राह्मण रहा करता था। परन्तु उसके घर में सुख-चैन न थी ; क्योंकि उसकी पत्नी बड़ी चुड़ैल थी। पत्नी से आखिर न पट सकी, वह जीवन से ऊब गया। सन्यास लेकर वह घर से चला गया।

शिवदत्त के तीन लड़के थे। बड़े लड़के का विवाह हो चुका था। उसकी पत्नी ने जब से घर में पैर रखा, तब से सास ने उसको सताना शुरू कर दिया। उसने जैसे-तैसे कुछ दिनों तक कष्ट सहे, फिर उससे न सहा गया। वह अपने मायके चली गई। उसके पीछे उसका पति भी गया।

उसके बाद दूसरे लड़के की पत्नी आई। उसकी पत्नी को भी चुड़ैल सास तङ्ग करने लगी। दूसरी बहू बहुत ही सीधी-सादी और पतिव्रता थी। उसे मायके जाना पसन्द न आया, और वह सास के कष्ट भी न सह पाती थी। इसलिये उसने आत्म-हत्या कर ली। पत्नी की मृत्यु के बाद, दूसरे लड़के ने शोक में पलङ्ग पकड़ी।

अपने बड़े भाइयों की दुर्गति देखकर तीसरे लड़के वासुदत्त ने अपनी माँ को अच्छा सबक सिखाने का निश्चय किया।

उसकी माँ बहुत चुड़ैल थी। चूँकि घरवाले भोलेभाले थे, इसलिये लोगों को उसकी दुष्टता के बारे में कुछ न मालूम था। वे कहा करते थे कि बड़ी बहू ज़रा हठी थी, इसलिये वह अपने पति को लेकर मायके चली गई। दूसरी बहू ने भी यूँही निष्कारण आत्म-हत्या कर ली थी। वासुदत्त ने माँ की पोल खोलने की सोची।

बी. के. पाटणकर

वह एक दिन किसी दूसरे गाँव में जा कर एक काठ की स्त्री-मूर्ति बनवा लाया। आधी रात के समय वह उस मूर्ति को अपने गाँव ले आया। फिर अपने घर के पास वाले मकान में उसको रखा। एक दासी को वहाँ पहरे पर बिठा, उसने माँ के पास जा कर कहा-"माँ, मैंने विवाह कर लिया है। यदि मेरी पत्नी इस घर में रही तो ख्वाहम ख्वाह लड़ाई-झगड़े होंगे। इसलिये मैंने उसके रहने का प्रबन्ध बगलवाले मकान में कर दिया है। न वह यहाँ आयेगी, न तू वहाँ जायेगी।"

माँ मान गई। वह अपनी दो बहुओं का गुस्सा तीसरी बहू पर उतारना चाहती थी। मौका न पा वह खिझी हुई थी। एक दिन लड़के को घर में न पा उसने एक चाल चली। मूसल लेकर अपना सिर फोड़ लिया और छाती पीट-पीट कर रोने लगी।

सब भागे भागे आये। लड़का भी आया। सब ने पूछा- क्या बात है ?

"देखा आप ने? मेरी बहू बिना किसी वजह के, मेरे सिर पर मूसल मार, अन्दर जा दरवाज़ा बन्दकर बैठ गई है।" उस चुड़ैल ने सब को बताया।

"अरे अरे, यह भी क्या बला है।" सोचते सोचते ज्योंही लोगों ने बगलवाले मकान में ताका, तो देखते क्या हैं कि एक लकड़ी की मूर्ति खड़ी है।

"यह मेरी पत्नी है। इसीने मेरी माँ का सिर मूसल से चकनाचूर कर दिया है। यही दरवाज़ा बन्दकर अन्दर आ खड़ी हुई है।" वासुदत्त ने सबको बताया। सब ने चुड़ैल का मजाक उड़ाया।

उसके बाद वासुदत्त ने अच्छी लड़की देख उससे शादी कर ली। उसकी पत्नी को कभी भूलकर भी उसकी माँ ने कुछ न कहा।

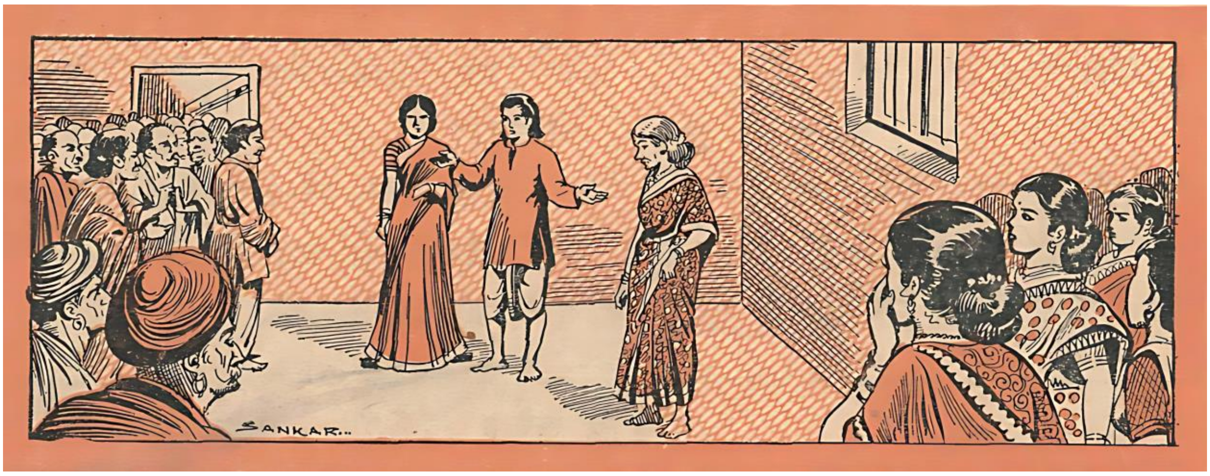

धार राज्य के राजा भोजराज के दरबार में माघ नाम का एक कवि रहा करता था। वे दोनों एक दिन शाम को घूमने के लिये निकले। कविता के मज़े में दोनों बहुत दूर निकल गये। समय का ख्याल न रहा। अन्धेरा हो गया। जब उन्होंने राजमहल की ओर लौटना चाहा तो उनको रास्ता दिखाई न दिया। बहुत कोशिश की, पर रास्ते का पता न लगा।

किसी से पूछ-ताछकर रास्ते का पता लगाने के लिये वे पासवाली एक झोंपड़ी में गये। वहाँ उनको एक गरीब बुढ़िया बैठी हुई दिखाई दी।

भोजराज ने उस बुढ़िया से पूछा- "दादी, यह रास्ता कहाँ जाता है?"

"यह रास्ता कहाँ जाता है? यह तो राहगीरों को मालूम होगा। भला रास्ते को क्या पता? बेटा, तुम कौन हो?" चतुर बुढ़िया ने पूछा।

"हम यात्री हैं।" माघ ने मुस्कुराते हुये कहा।

"इस सृष्टि में सूर्य और चन्द्रमा दो ही यात्री हैं। क्या तुम सूर्य और चन्द्रमा हो ?" बुढ़िया ने पूछा।

"हम क्षणिक अतिथि हैं।" माघ ने जवाब दिया।

"धन और यौवन; ये दो ही क्षणिक अतिथि हैं। आप तो वे दिखाई नहीं देते?" बुढ़िया ने उनको गौर से देखते हुये कहा। "हम राज्य-पालक हैं।" भोजराज ने कहा।

"इन्द्र और यम; ये दोनों ही पालक हैं। आप तो वे नहीं हैं?" बुढ़िया ने राजा को देख कर कहा।

सुरेन्द्रचन्द्र सक्सेना

"परन्तु हम सहन करनेवाले भी हैं।" भोजराज ने कहा।

"भूमि और स्त्री ही सहन करनेवाली हैं।" बुढ़िया ने कहा।

'हम वीतराग हैं।" माघ ने कहा।

"वीतराग कहने योग्य शनि और सन्तृप्ति मात्र हैं।" बुढ़िया ने कहा।

"हम परदेशी हैं।" भोजराज ने कहा।

"जीवात्मा, और पेड़ों का पानी ही परदेशी हैं।" बुढ़िया ने कहा।

"हम गरीब हैं।" माघ ने कहा।

"मेमना और लड़की ही गरीब हैं।" बुढ़िया ने कहा।

"हम समर्थ हैं।" भोजराज ने कहा।

"सामर्थ्यवाले सिर्फ भोजन और पानी हैं।" बुढ़िया ने कहा।

"दादी, हम हार मानते हैं।" माघ ने कहा। आखिर वह बुढ़िया का मुकाबला न कर सका।

"कर्ज़दार और लड़कियों के पिता के अतिरिक्त कोई कभी हारता है? बेटा, मगर तुम हो कौन ? बताया नहीं, क्या चाहिये ? अगर बताया, तो जो कुछ मुझ से बन सकेगा, मैं कर दूँगी।" बुढ़िया ने बड़े प्रेम से कहा।

माघ ने अपना पाण्डित्य दूर रखा और कहा-"दादी! ये हैं भोजराज! मुझे माघ कहते हैं। हम राजधानी का रास्ता न पा आफत में फँसे हुये हैं।"

"यह बात पहिले ही क्यों न कह दी थी ? सीधे उस रास्ते पर जाओ, राजधानी पहुँच जाओगे।" बुढ़िया ने कहा।

भोजराज और माघ बुढ़िया द्वारा बताये हुये रास्ते पर चलते चलते राजधानी पहुँच गये। घर पहुँच भोजराज ने बुढ़िया के लिये बहुत-सा ईनाम भेजा।

CHANDAMAMA (Hindi) FEBRUARY 1955 Regd. No. M. 5452

रङ्गीन चित्र-कथा, चित्र – २